04 - स्वतंत्रता के मायने?

05 - बोल के लब आजाद है तेरे

06 - 78वां या 79वां इस साल होगा कौन सा स्वतंत्रता दिवस

07 - भारत - वैश्विक ज्ञान परंपरा का उज्ज्वल आलोक

A Daily News Magazine

भोपाल

शुक्रवार, 15 अगस्त, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 336, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

स्वतंत्रता का उल्लास

स्वतंत्रता दिवस पर लाइटिंग से जगमग होता विधानसभा भवन। फोटो: प्रवीण वाजपेई

आज सुनाई देगी 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता की गूंज

लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री मोदी सुनाएंगे शौर्य गाथा

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में आतंकी व सैन्य ठिकानों पर कार्रवाई के लिए भारत द्वारा लॉन्च ऑपरेशन सिंदूर की सफलता इस साल के 79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह में लाल किले पर मुख्य आकर्षण होगी। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, समारोह में एम-17 हेलीकॉप्टर ऑपरेशन सिंदूर का प्रतीक चिन्ह वाला ध्वज लेकर उड़ान भरेगा। आमंत्रण पत्रों पर ऑपरेशन का लोगो और 'नया भारत' का प्रतीक चिन्ह चिनाब ब्रिज का वॉटरमार्क भी छपा है। 7 मई की सुबह भारतीय सेना ने यह अभियान शुरू किया और 10 मई शाम तक कार्रवाई जारी रही। पाकिस्तान और जेके में 9 आतंकी ठिकाने ध्वस्त किए गए।

इस ऑपरेशन में कम से कम 100 आतंकवादी ढेर हो गए। भारतीय वायुसेना ने 13 पाकिस्तानी एयरबेस व सैन्य ठिकानों पर हमले किए। सरकार ने

साफ कहा है कि आतंक के खिलाफ ऐसी स्ट्राइक अब 'न्यू नॉर्मल' हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह, सीडीएस जनरल अनिल चौहान, थलसेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी, नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी और वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह करेंगे। दिल्ली एरिया के जीओसी लेफ्टिनेंट जनरल भावनीश कुमार पीएम को सलामी मंच तक ले जाएंगे। फ्लाइंग ऑफीसर राशिका शर्मा पीएम की सहायता करेंगी, साथ ही 21 तोपों की सलामी दी जाएगी। वायुसेना बैंड में पहली बार 11 अग्निवीर वायु संगीतकार शामिल होंगे। जैसे ही राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाएगा, दो एम-17 हेलीकॉप्टरों से पुष्पवर्षा होगी। एक हेलीकॉप्टर राष्ट्रीय ध्वज ले जाएगा, दूसरा ऑपरेशन सिंदूर का ध्वज।

इस कार्यक्रम में करीब 5,000 विशेष अतिथि समारोह में शामिल होंगे। स्पेशल ओलंपिक्स 2025 की भारतीय टीम, अंतरराष्ट्रीय खेलों के विजेता, खेलो इंडिया पैरा गेम्स के स्वर्ण पदक विजेता, विभिन्न सरकारी योजनाओं में प्रशिक्षित व पुरस्कृत किसान और श्रेष्ठ सरपंच और मेधावी छात्रों को बुलाया गया है।

सुप्रभात

हर ख़ुशी हर मलाल तेरा है
लम्हा लम्हा ख़याल तेरा है

तेरे सारे जवाब मेरे हैं
मेरा हर इक सवाल तेरा है

मुझमें कुछ भी नहीं बचा मेरा
और ये भी कमाल तेरा है

प्यार मेरा है पीर मेरी है
मछली तेरी है जाल तेरा है

उँगलियों में धड़क रहा है दिल
मेरे हाथों में गाल तेरा है

मुझमें तुझको निहारते है लोग
मुझमें सारा जमाल तेरा है।

- साक्षी तिवारी

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

देश के 79 वें स्वतंत्रता दिवस पर 'सुबह सवेरे' कार्यालय में अवकाश रहेगा। अखबार का अगला अंक दि. 17 अगस्त 2025 को प्रकाशित होगा। 'सुबह सवेरे' के सभी पाठकों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। **सं.**

विशेष संपादकीय

भारत न झुका है न कभी झुकेगा!

अजय बोकिल

भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस पर देश परीक्षा की कठिन घड़ी से गुजर रहा है। देश की विदेश नीति और राजनीतिक चातुर्य एक बार फिर कसौटी पर है। विश्व की महाशक्ति अमेरिका और उसके राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भारत को दुनिया में अलग-थलग करने की भरपूर कोशिशें कर रहे हैं और इसके लिए हर संभव चाल चल रहे हैं, जिसमें भारत के दुश्मन नंबर वन पाकिस्तान को अपनी गोद में बिठाना शामिल है। कुछ समय पहले तक भारत और अमेरिका के रिश्तों में नई गर्माहट आई थी और दुनिया आर्थिक राजनीतिक संदर्भों में भारत की व्यापक और संभावनाशील भूमिका को स्वीकार कर उसे अपने पाले में खींचने की भरपूर कोशिश कर रही थी। भारत का क्वाड का सदस्य बना और चीन के बीआरबीओ प्रोजेक्ट के समांतर एक और अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्ग खोलने की योजना बनी, जिसमें भारत की अहम भूमिका थी। तब अमेरिका का मानना था कि दुनिया में उसका दुश्मन नंबर एक चीन है और चीन से मुकाबला करने में भारत की बहुत बड़ी भूमिका है। क्योंकि भारत आबादी की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा देश और सबसे बड़ा लोकतंत्र भी है। तब अमेरिका भारत को अपने पाले में खींचने की कोशिशें कर रहा था, लेकिन उसके शत्रुओं से भारत के अच्छे रिश्तों पर उसे बहुत गंभीर आपत्ति नहीं थी। लेकिन बीते तीन सालों में रूस-यूक्रेन युद्ध, गाजा पर अमेरिकी हमले ने विश्व के भू राजनीतिक समीकरणों में उथल-पुथल मचा दी है। जिन ट्रंप से भारत को बड़ी उम्मीदें थीं और जिन्हें चुनाव में जिताने के लिए भक्तों ने भारत में यज्ञ हवन तक किए वो ही भारत के महादुश्मन निकले। ट्रंप चाहते हैं कि भारत बड़ी अर्थव्यवस्था होने के नाते अमेरिका का अनुगामी बन जाए वरना वो मनमाना टैरिफ और जुर्माना लगाकर भारतीय अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। अमेरिका का यही रवैया रहा तो उसके पिछलग्गू यूरोपीय देशों की नजरें भी बदल सकती हैं। अमेरिका चाहता है कि भारत उन्हीं देशों से रिश्ते रखे, जिनसे वो चाहे और जैसा चाहे। तीन साल से जारी रूस-यूक्रेन युद्ध रूकवाने के लिए वो भारत की नाक दबाकर रूस का मुंह खुलवाना चाहते हैं। साथ ही टैरिफ को हथियार बनाकर भारत के कृषि और डेयरी बाजार में घुसपैठ कर भारतीय किसानों और पशुपालकों को तबाह कर देना चाहते हैं। यह दबाव की रणनीति ही नहीं, शुद्ध ब्लैकमेल है। यूं अमेरिका पहले भी भारत को किसी न किसी रूप में धमकाता रहा है। चाहे व 1971 के भारत पाक युद्ध के समय हिंद महासागर में सातवां बेड़ा भेजना हो या 1998 में भारत द्वारा स्वयं परमाणु महाशक्ति घोषित करने के बाद भारत पर लगाए कड़े आर्थिक प्रतिबंध हों, उसने कभी कोई नरमी नहीं दिखाई। वही संकट आज भी सामने है। लेकिन भारत स्वतंत्र देश है। उसकी विदेश नीति भी स्वतंत्र और देशहितोन्मुखी है। स्वतंत्रता दिवस पर इस संकल्प को दोहराना जरूरी है कि हम न तो दबाव के आगे कभी झुके थे और न ही झुकेंगे। जयहिंद।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश पुलिस की नवीन आपातकालीन सेवा डायल 112 का किया शुभारंभ

डायल-112 सेवा त्वरित प्रक्रिया और सहायता का है वादा : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि समाज की व्यवस्थाओं में पुलिस की अहम भूमिका है। डायल 112 के शुभारंभ के लिए मध्यप्रदेश पुलिस बधाई की पात्र है। डायल 112 पुलिस की तत्परता बढ़ाने की नई पहल है यह आपातकालीन नंबर सुरक्षित समाज के ईको सिस्टम का आधार बनेगा। यह नंबर प्रदेशवासियों के लिए पुलिस की ओर से त्वरित प्रतिक्रिया का वादा और सहायता की जिम्मेदारी सिद्ध होगा। आज मिनिमम गवर्मेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस का दौर है, जिसमें डायल 112, वन नंबर फॉर ऑल सर्विसेज की महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। पुलिस कंट्रोल रूम नई तकनीक से लैस हुए हैं। एफआरवी (फास्ट रिस्पांस व्हीकल) वाहनों को अत्याधुनिक उपकरणों से लैस किया गया है। मध्यप्रदेश के डायल 100 के मॉडल को उत्तर प्रदेश सहित दूसरे राज्यों ने अपनाया। डायल 100 ने अपनी सजगता और दक्षता से प्रदेश में 2 लाख 23 हजार बुजुर्ग, 19 लाख से अधिक महिलाओं, 1300 नवजातों की सुरक्षा और 23 हजार गुमशुदा बच्चों को परिवार से मिलाया है। यह मध्यप्रदेश पुलिस के लिए बड़ी उपलब्धि है। आज लॉन्च हुई डायल

112 सेवा देश के विकास के साथ कदम से कदम मिलाएगी। डायल 112 सेवा नागरिकों को कई प्रकार की आपातकालीन परिस्थितियों में हर संभव सहायता उपलब्ध कराएगी। राज्य सरकार ने इन वाहनों के लिए बजट बढ़ाकर 1500 करोड़ रूपए से अधिक किया है। राज्य सरकार के लिए प्रदेशवासियों की सुरक्षा सर्वोपरि है। मध्यप्रदेश पुलिस सुरक्षा मानकों के पैमाने पर खरी उतरी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह विचार डायल-112 सेवा के शुभारंभ के लिए कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रिमोट का बटन दबाकर डॉयल 112 वाहन का लोकार्पण किया और जिलों में भेजे जाने वाले वाहनों को झंडी दिखाई।

दर्शन को पहुंचे थे श्रद्धालु तभी आ गई भीषण आपदा

अब किश्तवाड़ा में बादल फटने से तबाही, 41 लोगों की मौत

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में किश्तवाड़ के चशोटी गांव में गुरुवार दोपहर 12.30 बजे बादल फटा। कई लोग पहाड़ से आए पानी और मलबे की चपेट में आ गए। हादसे में 41 लोगों की मौत हो गई है। इनमें से 40 शव भी मिल गए हैं। अब तक 65 लोगों को बचाया गया है। करीब 200 लोग लापता हैं। हादसा उस समय हुआ जब हजारों श्रद्धालु मचैल माता यात्रा के लिए किश्तवाड़ में पड्डर सब-डिवीजन में चशोटी गांव पहुंचे थे। यह यात्रा का पहला पड़ाव है। बादल वहीं फटा है, जहां से यात्रा शुरू होने वाली थी। यहां श्रद्धालुओं की बसें, टेंट, लंगर और कई दुकानें थीं। सभी बाढ़ के पानी में बह गए। मचैल माता तीर्थयात्रा हर साल अगस्त में होती है। इसमें हजारों श्रद्धालु आते हैं। यह 25 जुलाई से 5 सितंबर तक चलेगी। यह रूट जम्मू से किश्तवाड़ तक 210 किमी लंबा है और इसमें पद्दर से चशोटी तक 19.5 किमी की सड़क पर गाड़ियां जा सकती हैं। उसके बाद 8.5 किमी की पैदल यात्रा होती है। किश्तवाड़ के बादल फटने की घटना की जद में काफी मकान भी आने की आशंका है।

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने की अमित शाह से बात

जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने एक्स पर लिखा, मैंने अभी-अभी केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से बात की और उन्हें जम्मू के किश्तवाड़ क्षेत्र की स्थिति के बारे में जानकारी दी। खबर गंभीर और सटीक है, बादल फटने से प्रभावित क्षेत्र से सत्यापित जानकारी आने में देरी हो रही है। बचाव कार्यों के प्रबंधन के लिए जम्मू-कश्मीर के भीतर और बाहर से सभी संभव संसाधन जुटाए जा रहे हैं। मैं चैनलों या समाचार एजेंसियों से बात नहीं करूंगा। सरकार जब भी संभव होगा जानकारी साझा करेगी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 15 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भारत में कृषि संस्कृति के जनक हैं भगवान श्री बलराम : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

धन्य हैं देश के किसान और जवान,प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत बना है विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था,मंडला जिले में निरंतर होंगे विकास के कार्य

82 लाख से अधिक किसानों के खातों में किसान सम्मान निधि की राशि की अंतरित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भगवान श्री बलराम भारत में कृषि संस्कृति के जनक हैं। वे हलधर, महान बलशाली, मेहनतकश, शुद्ध हृदय और पराक्रमी थे। उनका जन्म दिवस हल षष्ठी के रूप में संतान के कल्याण के लिए भी मनाया जाता है। वे आदर्श पुत्र और आदर्श भ्राता थे। विश्व में तीन भाइयों राम लक्ष्मण, श्रीकृष्ण बलराम और विक्रमादित्य एवं भर्तृहरि की जोड़ी आदर्श हैं। ये हमारी सनातन संस्कृति की गौरव पताका और हमारे आदर्श हैं। बलराम जयंती के अवसर पर हम उन्हें स्मरण करें और उनके आदर्शों को जीवन में उतारें।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरुवार को मंडला में बलराम जयंती समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के 82 लाख से अधिक किसानों के खातों में किसान सम्मान निधि की 1671 करोड़ रुपए की राशि का उनके खातों में सीधा अंतरण किया। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में 226.12 करोड़ रूपये की लागत के 24 निर्माण कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन भी किया। मुख्यमंत्री ने उपस्थित जनसमुदाय से पूरे उत्साह के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाने और राजा शंकर शाह

रघुनाथ शाह, रानी दुर्गावती, तात्या टोपे, टंट्या मामा जैसे महान क्रांतिकारी और देशभक्तों को स्मरण करने का आह्वान किया। साथ ही प्रदेश के विकास का संकल्प दिलाया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहां से हमारे किसान और जवान दोनों धन है। एक तरफ अन्नदाता किसान जी-जान लगाकर खेती करता है और हम सब का पेट भरता है। वही हमारे जवान सीमा पर जान जोखिम में डालकर निरंतर हमारी सुरक्षा करते हैं। जब-जब देश के दुश्मनों ने हम पर आख उठाइ, हमारे जवानों ने मुह तोड़ जवाब दिया है। ऑपरेशन सिंदूर इस बात का जीता जागता उदाहरण है। जब पहलगांव में आतंकवादियों ने हमारी बहनों का सिंदूर उजाड़ने का कुत्सित प्रयास किया तब हमारे जवानों ने पाकिस्तान के सभी आतंकवादी ठिकानों का सफाया कर दिया।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश भारत का सबसे तेज गति से उन्नति करता राज्य है। वर्ष 2023 तक मध्यप्रदेश में सिंचाई, बिजली, पानी, सड़क जैसी मूलभूत सुविधाओं का भी नियतांक अभाव था वही बीते लगभग 20 वर्षों में प्रदेश में हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। बीते सवा साल में प्रदेश में लगभग साढे लाख हेक्टेयर सिंचाई का रकबा बढ़ा है। प्रदेश में युवा, महिला, किसान और गरीबों के साथ ही समाज के हर वर्ग के कल्याण के लिए कार्य हो रहे हैं। कृषि के क्षेत्र में भी प्रदेश तेज गति से विकास कर रहाहै। प्रदेश को सात बार कृषि क्रमण पुरस्कार मिल चुका है, दाल उत्पादन में देश में प्रथम है और खाद्यान्न उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। प्रदेश में गेहूं के उपार्जन, धान के उपार्जन अनुदान के बाद अब सरकार ने इस साल से कोदो कुटकी को भी समर्थन मूल्य पर खरीदने का निर्णय लिया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मंडला में आयोजित बलराम जयंती कार्यक्रम में जनजातीय समाज के साथ परंपरागत वाद्य-यंत्र बजाते हुए।

कन्नड़ अभिनेता दर्शन को सुप्रीम कोर्ट से झटका

- **रेणुकास्वामी मर्डर केस में जमानत को कर दिया रद्द**

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को कन्नड़ फिल्म अभिनेता दर्शन को तगड़ा झटका दिया है। उच्चतम न्यायालय ने दर्शन को एक फैन (रेणुकास्वामी) की हत्या के मामले में कर्नाटक

हाईकोर्ट से मिली जमानत को रद्द कर दिया है। इसके अलावा कोर्ट ने दर्शन को तुरंत ही गिरफ्तार करने का आदेश भी दिया है। न्याय मूर्ति जे बी पादरीवाला और न्यायमूर्ति आर महादेवन की पीठ ने कर्नाटक हाईकोर्ट की दोनों आरोपियों को जमानत देने की याचिका पर सुनवाई की थी। सुनवाई के दौरान दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद पीठ ने 24 जुलाई को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। पीठ की तरह से आदेश सुनाते हुए न्यायमूर्ति महादेवन ने कहा, कर्नाटक हाईकोर्ट का आदेश रद्द किया जाता है और अभियुक्त को दी गई जमानत भी रद्द की जाती है। न्यायमूर्ति जे बी पादरीवाला ने कहा,न्यायमूर्ति महादेवन ने एक अत्यंत विद्वतापूर्ण निर्णय सुनाया है। यह संदेश देता है कि अभियुक्त चाहे कितना भी बड़ा क्यों न कहो, वह कानून से ऊपर नहीं हो सकता है।

राजधानी की सड़कों पर देशभक्ति का जुनून, सुपर बाइक्स का रोमांच

मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड का आयोजन, पारंपरिक परिधान में सम्मिलित हुए 100 से अधिक बाइकर्स

भोपाल (नप्र)। भारत की स्वतंत्रता के अमृत काल में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के आहवान पर 'हर घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में बुधवार को बाइकर्स रैली का आयोजन किया गया। बाइक रैली में 100 से अधिक महिला और पुरुष बाइकर्स सम्मिलित हुए। बाइकर्स, बाइक्स पर सवार होकर, हाथों में तिरंगा लहराते हुए राजधानी की सड़कों पर निकले और एकता का संदेश दिया। सुबह 7 बजे कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर से शुरू हुई इस रैली को ज्वाइंट डायरेक्टर (एडवेंचर) श्री एस.के. श्रीवास्तव ने झंडी दिखाकर रवाना किया।

देशभक्ति की लहर-बाइक रैली शौर्य स्मारक, वल्लभ भवन, विधानसभा, रोशनपुरा, गौहर महल, इकबाल मैदान, कोहेफिजा, वीआईपी रोड, रवीन्द्र भवन, राजभवन से होती हुई कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर पहुंची। हाथों में लहराते तिरंगों, आसमान में छोड़े गए रंग-बिरंगे गुब्बारों और 'वंदे मातरम्,' 'भारत माता की जय' जैसे जोशीले नारों ने हर नागरिक को देशभक्ति के रंग से सराबोर कर दिया।

राज्यपाल श्री पटेल की ओर से स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का हुआ सम्मान

भोपाल। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का उनके घर पर सम्मान कराया।

राज्यपाल श्री पटेल की ओर से भोपाल निवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री मोहम्मद जमीर, श्रीमती सावित्री देवी वर्मा, श्री देवीशरण, श्रीमती पार्वती देवी और श्रीमती नारायणी देवी को सम्मान स्वरूप शॉल, श्रीफल, मिठाई और उपहार भेंट किए गए। इसी प्रकार स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय श्री हबीब नज़र की पत्नी श्रीमती फिरोज़ जहां और स्व. मोहम्मद मुख्तार खान की पत्नी श्रीमती अख्तर जहां का राजभवन के अधिकारी-कर्मचारियों ने उनके निवास पर जाकर सम्मान किया गया।

एलओसी पर अब सेना की ताकत हो जाएगी दोगुना

सुंदरबनी (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय वीरों ने अपने पराक्रम से दुश्मन के दांत खट्टे कर दिए थे। आतंकियों और उनके आकाओं को दिखा दिया कि भारत की अभेद्य सुरक्षा पार करना आसान नहीं। इसी कड़ी में भारतीय सेना की ताकत दो गुनी हो रही है, खासकर सीमावर्ती इलाकों में। एलओसी पर अब सेना उन्नत तकनीक और स्वदेशी हथियारों के दम पर किसी भी खतरे का मुंह बंद करने को तैयार है। रोबोटिक म्यूल, स्मार्ट बाड़ और मिनी ड्रोन ताकत बढ़ा रहे हैं।

पाकिस्तान समझ ले, वरना काफी दर्दनाक होगा अंजाम

- **भारत बोला-जुबान पर कंट्रोल रखें पाकिस्तानी नेता**

कहा-कोई गलत कदम उठाया तो नतीजा बुरा होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने पाकिस्तानी नेताओं को जुबान पर कंट्रोल रखने की सलाह दी है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने गुरुवार को साप्ताहिक प्रेस ब्रीफिंग में कहा कि पाकिस्तानी नेता भारत के खिलाफ गैर-जिम्मेदार, युद्ध भड़काने

वाले और नफरत फैलाने वाले बयान दे रहे हैं। जायसवाल ने कहा कि पाकिस्तानी नेता अपनी नाकामियों को छुपाने के लिए बार-बार ऐसे बयान देते हैं। उन्हें अपनी जुबान पर कंट्रोल रखना चाहिए, क्योंकि अगर उन्होंने कोई गलत कदम उठाया तो उसका नतीजा बुरा होगा।

पहलगाम में जो हुआ उसे नजरअंदाज नहीं कर सकते

- **जम्मू-कश्मीर के पूर्ण राज्य की मांग पर बोली सुप्रीम अदालत**

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में गुरुवार को जम्मू-कश्मीर के पूर्ण राज्य का दर्जा दोबारा बहाल करने के मामले से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई हुई। कोर्ट ने केंद्र सरकार से आठ हफ्तों के अंदर लिखित जवाब मांगा है। कोर्ट ने अप्रैल में हुए पहलगाम आतंकी हमले का भी जिक्र किया। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बीआर गवई और जस्टिस के विनोद चंद्रन की बेंच ने कहा कि जम्मू-कश्मीर

की जमीनी हकीकत और पहलगाम जैसी आतंकी घटनाओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता। दरअसल, 5 अगस्त 2019 को अनुच्छेद 370 हटाने के बाद केंद्र सरकार ने केंद्र शासित प्रदेश बनाया था। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट में केंद्र के फैसले को चुनौती दी गई। दिसंबर 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने राज्य से आर्टिकल 370 हटाने और विशेष राज्य का दर्जा समाप्त करने को सही माना था।

झूठे नैरेटिव के लिए 'चोरी' जैसे गंदे शब्द से बचें:ईसी

राहुल गांधी को इलेक्शन कमीशन ने दे दी नसीहत

चुनाव आयोग बोला-यह करोड़ों वोटर्स पर हमला

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की ओर से वोटर लिस्ट में धांधली का आरोप लगाने और एक व्यक्ति एक वोट की लड़ाई

लड़ने के दावे पर चुनाव आयोग का जवाब आया है। इलेक्शन कमिशन ने गुरुवार को राहुल गांधी को याद दिलाते हुए कहा कि देश में एक वोट एक व्यक्ति का सिद्धांत तो 1951-52 में हुए पहले आम चुनाव के दौर से ही लागू है। भारत में अंग्रेजों से आजादी मिलने और लोकतंत्र लागू होने के बाद 1952 में ही पहले चुनाव हुए थे। आयोग ने कहा कि एक व्यक्ति एक वोट जैसी बात कोई नई चीज तो नहीं है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि यदि किसी के पास कोई सबूत है कि किसी व्यक्ति ने दो बार किसी चुनाव में वोट डाला है तो फिर उसकी जानकारी शेयर की जाए। आयोग ने कहा कि कोई भी व्यक्ति ऐसी जानकारी मिलने पर एफिडेविट के साथ चुनाव आयोग से संपर्क कर सकता है। निर्वाचन आयोग ने कहा कि यही सही तरीका है। यदि इसकी बजाय बिना किसी सबूत के चुने हुए प्रतिनिधियों को चोर बताया गया तो यह गलत होगा। इससे भारत की चुनाव प्रक्रिया असर होगा और उसका सम्मान कम हो जाएगा। राहुल गांधी के

लगातार हमलों के बीच आयोग ने गुरुवार को कहा कि 'वोट चोरी' जैसे गंदे शब्दों का इस्तेमाल करके झूठे विमर्श गढ़ने के बजाय सबूत दिए जाने चाहिए। आयोग ने एक बयान में कहा कि एक व्यक्ति एक वोट का कानून 1951-1952 में हुए पहले चुनावों से ही अस्तित्व में है। बयान में आगे कहा गया है कि भारतीय मतदाताओं के लिए वोट चोरी जैसे गंदे वाक्यांश ठीक नहीं।

'सुप्रीम' आदेश,65 लाख नामों की सूची वेबसाइट पर डालें

- **चुनाव आयोग से कहा-मंगलवार तक बताएं,क्या कर रहे हैं**
- **एसआईआर पर सुप्रीम कोर्ट ने खत्म कर दी विवाद की जड़**

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार में वोटर लिस्ट से हटाए गए 65 लाख लोगों के नाम चुनाव आयोग अब जारी करेगा। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को बिहार में वोटर लिस्ट के एसआईआर के खिलाफ दर्ज याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया। बेंच ने कहा कि आयोग 19 अगस्त तक उन 65 लाख लोगों के नाम उजागर करे, जिन्हें वोटर लिस्ट से हटाया गया है। इसके अलावा 22 अगस्त तक इस आदेश के पालन की रिपोर्ट भी सौंपे। सुनवाई के दौरान निर्वाचन आयोग ने मृत, जिला स्तर पर पलायन कर चुके या दूसरे स्थानों पर जा चुके मतदाताओं की सूची साझा करने पर सहमति जताई। अगली सुनवाई अदालत में अब 23 अगस्त को होगी। बेंच ने यह भी कहा कि जिन लोगों के नाम गलत तरीके से हटे होंगे, उन्हें सुनवाई के लिए 30 दिन का मौका मिलेगा। इसके अलावा आयोग यह भी बताएगा कि इन लोगों के नाम क्यों लिस्ट से हटाने का फैसला लिया गया है। यदि किसी को आपत्ति होगी तो वह संपर्क करेगा और जरूरी दस्तावेज देने के बाद उनके नामों को शामिल

किया जा सकेगा। अदालत ने कहा कि आप वेबसाइट और स्थान के विवरण के लिए सार्वजनिक नोटिस जारी करने पर विचार करें, जहां लोगों (मृत, पलायन कर चुके या दूसरे स्थानों पर चले गये) की जानकारी साझा की जा सके। इस पर चुनाव आयोग ने बताया कि हमने राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं को मृत, पलायन कर चुके या दूसरे स्थानों पर चले गये लोगों के नामों की सूची दी थी। इस पर अदालत ने सख्त रुख अपनाया। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉय बागची की बेंच ने कहा कि हम नहीं चाहते कि नागरिकों के अधिकार राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं पर निर्भर रहें। बेंच ने कहा कि मृत, पलायन कर चुके या दूसरे स्थानों पर चले गये मतदाताओं के नामों को नोटिस बोर्ड या वेबसाइट पर प्रदर्शित करने से अनजाने में हुई त्रुटियों को सुधारने का मौका मिलेगा। आयोग ने कहा कि राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं को मृत, पलायन कर चुके या दूसरे स्थानों पर चले गये लोगों के नामों की सूची दी गई है।

हरियाणा में शिक्षक ट्रांसफर पॉलिसी में होगा बड़ा बदलाव

कपल केस में सीएम करेंगे फैसला,फाइल सीएमओ पहुंची

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा में शिक्षकों की ऑनलाइन ट्रांसफर पॉलिसी को लेकर बदलाव की सुगबुगाहट है। ट्रांसफर को लेकर शिक्षा निदेशालय स्तर पर एक संशोधित प्रस्ताव तैयार कर मुख्यमंत्री कार्यालय को भेजा गया है। विशेष बात यह है कि इस बार कपल (पति-पत्नी) ट्रांसफर केस में मिलने वाले अतिरिक्त अंकों को लेकर असमंजस बनी हुई है। प्रस्ताव में इस विषय पर निर्णय मुख्यमंत्री की मंजूरी पर टिका है। सूत्रों के

अनुसार शिक्षा विभाग ने कुछ बिंदुओं पर मॉडल ट्रांसफर पॉलिसी के प्रारूप से छूट मांगी है। इनमें कपल केस के अंकों के अलावा सर्विस रूल के तहत शिक्षकों को दी गई मेजर (गंभीर) या आंशिक (हल्की) पेनल्टी को भी स्कोर में शामिल करने का प्रस्ताव है। शिक्षक को सर्विस पीरियड में पेनल्टी मिली है तो उसके अंकों में कटौती की जाएगी, जिससे उसको ट्रांसफर प्राथमिकता प्रभावित हो सकती है।

कपल केस को देश भर में लागू करने की तैयारी- अब हरियाणा सरकार द्वारा मॉडल ट्रांसफर पॉलिसी बना दी गई है और उसमें कपल केस को पूरे भारत वर्ष के लिए लागू करने की सिफारिशें की गई है। मगर शिक्षा विभाग की ऑनलाइन ट्रांसफर पॉलिसी में कपल केस के संबंध में मेजर बदलाव होने की सुगबुगाहट है। दर असल, शिक्षा विभाग ने 2016 में ट्रांसफर पॉलिसी बनाई। उस समय पहली बार सभी शिक्षकों के तबादले हुए थे। उसके बाद वर्ष 2017, 2019 और फिर 2022 में अंतिम बार तबादले हुए। हालांकि जेबीटी के वर्ष 2016 के बाद से आज तक तबादले नहीं हुए हैं।

माधुरी हथिनी विवाद पर अब 25 अगस्त को होगी सुनवाई

- **गुजरात के वनतारा शिफ्ट करने पर आपत्ति,याचिकाकर्ताओं की मांग-वापस महाराष्ट्र लाया जाए**

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के कोल्हापुर की मशहूर हथिनी (माधुरी) की शिफ्टिंग को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने वनतारा के हाथियों पर दायर की गई याचिका को 'पूरी तरह अस्पष्ट' बताया। जस्टिस पंकज मित्तल और पीबी वराले की पीठ ने याचिकाकर्ता के वकील सीआर जया सुकीन से कहा कि वह वनतारा पर आरोप लगा रहे हैं। जबकि उसे

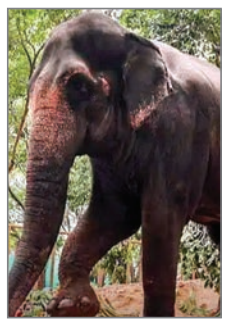

याचिका में पक्षकार के रूप में शामिल ही नहीं किया गया है। अदालत ने उन्हें वनतारा को पक्षकार बनाने और फिर मामले में लौटने को कहा। अब इस मामले की सुनवाई 25 अगस्त को होगी। सीजेआई बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पीठ 11 अगस्त को हथिनी को वनतारा भेजने के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई को सहमत हुई थी।

भारतीय सेना को समर्पित रही शौर्य स्मारक की तिरंगा यात्रा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भारतीय सेना के शौर्य को समर्पित हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत शौर्य स्मारक से विशाल तिरंगा यात्रा का शुभारंभ तिरंगा फहराकर किया। भोपाल महापौर श्रीमती मालती राय और भोपाल की दक्षिण पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री भगवान दास सबनानी साथ थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस अवसर पर अमर शहीदों और वीर पराक्रमी सैनिकों का स्मरण किया। शौर्य स्मारक से भारत माता चौक (डिपो चौराहा) तक जाने वाली तिरंगा यात्रा में दो पहिया वाहनों पर बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल हुईं। भारत माता का रथ, ब्रह्मोस और राफेल मिसाइल के मॉडल भी यात्रा शामिल हुए। तिरंगा यात्राओं का जगह-जगह पुष्प वर्षा और तिरंगा लहराकर स्वागत किया गया। साथ ही राष्ट्र भक्ति के गीतों और भारत माता की जय के नारों से पूरा वातावरण गूंज उठा। सभी वर्गों में तिरंगा यात्रा को लेकर उत्साह बना रहा।

सुरमयी सांस्कृतिक संध्या में होगा भरतनाट्यम

- मप्र भवन, दिल्ली में 22 अगस्त को आयोजित होगा कार्यक्रम

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के मधुर लोक सुरों की प्रस्तुति के तहत 'सुरमयी सांस्कृतिक संध्या' का आयोजन 22 अगस्त 2025 को मध्यप्रदेश भवन, नई दिल्ली में किया जाएगा। इस अवसर पर नृत्य कलाकार लता सिंह मुंशी एवं समूह द्वारा भरतनाट्यम नृत्य की प्रस्तुति दी जाएगी। मध्यप्रदेश की समृद्ध संस्कृति से सजे इस कार्यक्रम में स्वरबद्ध और भावपूर्ण लोक संगीत की मनमोहक झलक देखने को मिलेगी। यह आयोजन संस्कृति एवं पर्यटन विभाग, म.प्र. शासन और आवासीय आयुक्त, म.प्र. भवन द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम का समय शाम 6:30 से 7:30 बजे तक निर्धारित है।

राज्यपाल ने प्रदेशवासियों को दीं स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त की बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। राज्यपाल श्री पटेल ने देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान करने वाले क्रांतिकारियों, देशभक्तों और वीर शहीदों को नमन किया है। राज्यपाल श्री पटेल ने अपने संदेश में कहा है कि आज का दिन हमारे महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, बलिदानियों और राष्ट्र निर्माताओं के अदम्य साहस, समर्पण, त्याग और देशभक्ति को स्मरण करने का अवसर है, जिन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर हमें स्वतंत्र भारत का अमूल्य उपहार दिया। हम सभी उन्हें कृतज्ञता के साथ नमन करते हैं। राज्यपाल श्री पटेल ने नागरिकों से अपील है कि स्वतंत्रता अधिकार के साथ एक जिम्मेदारी भी है। हमें राष्ट्र की एकता, अखंडता और प्रगति के लिए सतत प्रयासरत रहना चाहिए। सभी संकल्प लें कि सबका साथ-सबका विश्वास और सबका प्रयास के संकल्प सूत्र के साथ भारत को सशक्त, समृद्ध, आत्मनिर्भर और विकसित बनाने में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देंगे।

हर्षोल्लास के साथ मनाएं स्वतंत्रता दिवस : सुश्री निर्मला भूरिया

भोपाल(नप्र)। महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देश और प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा है कि यह पर्व हमें स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान की याद दिलाता है और देश की एकता, अखंडता एवं प्रगति के लिए निरंतर प्रयासरत रहने की प्रेरणा देता है। मंत्री सुश्री भूरिया ने प्रदेश के सभी नागरिकों, जनप्रतिनिधियों और विभागीय अधिकारियों-कर्मचारियों से स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर ऐसा नया भारत बनाएं, जहां गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण और भ्रष्टाचार के लिए कोई स्थान न हो तथा प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करे। उन्होंने सभी से सामाजिक सद्भाव, आपसी भाईचारे और विकास की दिशा में योगदान देने की अपील की। सुश्री भूरिया ने कहा कि मध्यप्रदेश ने विकास के सभी क्षेत्रों में नित्य नए आयाम स्थापित किए हैं। राज्य सरकार प्रदेश के बच्चों के सर्वांगीण विकास और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए दृढ़ संकल्पित है। उन्होंने नागरिकों से संवैधानिक मूल्यों का पालन करते हुए भारत को विश्व का अग्रणी और सशक्त राष्ट्र बनाने में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान करते हुए कहा कि हम सब मिलकर एक नए, सशक्त और समृद्ध भारत के निर्माण का संकल्प लें।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में कोलार से निकली सबसे बड़ी तिरंगा यात्रा

- कर्मश्री संस्था की तिरंगा यात्रा कोलार रोड स्थित मदर टेरेसा स्कूल से 32 किमी दूर बैरागढ़ पहुंची
- सीएम, प्रदेश अध्यक्ष-विधायक खुली जीप में सवार हुए

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार रोड स्थित मदर टेरेसा स्कूल से संत हिरदाराम नगर (बैरागढ़) तक करीब 32 किलोमीटर लंबी तिरंगा यात्रा निकाली गई। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने तिरंगा यात्रा को हरी झंडी दिखाई। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, प्रदेश संगठन मंत्री हितानंद भी मौजूद रहे। हुजूर विधायक रामेश्वर शर्मा ने स्वागत भाषण दिया और यात्रा के बारे में जानकारी दी। दोपहर 12 बजे सीएम, प्रदेश अध्यक्ष और संगठन मंत्री यात्रा स्थल पर पहुंचे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि तिरंगा यात्रा में शामिल होने के लिए यहां सैलाब ही उमड़ पड़ा है। यह यात्रा नया रिकॉर्ड बना रही है। प्रदेश अध्यक्ष खंडेलवाल ने भी संबोधित किया। इसके बाद मुख्यमंत्री डॉ. यादव, बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष खंडेलवाल, प्रदेश संगठन मंत्री हितानंद ने यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सीएम, प्रदेश अध्यक्ष-विधायक खुली जीप में सवार हुए। सीएम खुद हाथों में तिरंगा थामे हुए रहे।

एम्बुलेंस को दिया रास्ता

यात्रा को लेकर बड़ी संख्या में लोग सुबह से ही पहुंच गए। इस दौरान सुबह 11.30 बजे एक एम्बुलेंस गुजरी। जिसे लोगों ने रास्ता दिया। एम्बुलेंस में मरीज था। जिससे मरीज को समय पर अस्पताल पहुंचाया जा सका।

विधायक की संस्था 'कर्मश्री' का आयोजन

हुजूर विधायक शर्मा की संस्था 'कर्मश्री' यह आयोजन कर रही है। 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत ऑपरेशन सिंदूर को समर्पित यह यात्रा कोलार रोड से शुरू हुई। विधायक शर्मा ने बताया, तिरंगा यात्रा कोलार रोड, चूना भट्टी, कोलार गेस्ट हाउस तिराहा, मैनिट, माता मंदिर, अटल पथ, न्यू मार्केट, रोशनपुरा, पॉलीटेक्निक चौराहा, कमला पार्क, वीआईपी रोड, खानूगांव, लालघाटी, बैरागढ़ होते हुए भैंसाखेड़ी स्थित कृषि उपज मंडी पहुंची। जहां यात्रा का समापन हुआ। लोग राष्ट्रभक्ति के रंग में रंग कर, तिरंगा थामे और भारत माता के जयघोष लगाते हुए निकल रहे थे।

50 हजार से ज्यादा गाड़ियां थीं शामिल

इस यात्रा में 50 हजार से अधिक छोटे-बड़े वाहन शामिल हो रहे हैं। यात्रा मार्ग को भी आकर्षक तरीके से सजाया गया। करीब एक हजार जगहों पर स्वागत किया गया। इससे सड़कें फूलों से पट गई थीं।

श्री अरविंदो का 'विशाल भारत' वास्तव में आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रवादी भारत है

भोपाल। श्री अरविंदो के विशाल भारत' से तात्पर्य न केवल भौगोलिक रूप से एक अखंड भारत है बल्कि वह आध्यात्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रवादी भारत भी है। उन्होंने देश के विभाजन के बाद कहा था कि भारत फिर एक होगा और उसके किंचित लक्षण वैश्विक परिदृश्य पर दिखाई भी देने लगे हैं। इस आशय के विचार आज पुरूषार्थ सेवा संगठन भवन, शिवाजी नगर में विभिन्न वक्ताओं ने व्यक्त किए। इसका आयोजन राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच के भोपाल चेप्टर द्वारा किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता भोपाल चेप्टर के अध्यक्ष एवं मप्र के पूर्व डीजीपी एस.के.राउत ने की। विषय था 'श्री अरविंदो के चिंतन में विशाल भारत।' कार्यक्रम के मुख्य वक्ता और दै. सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक अजय बोकिल ने कहा कि श्री अरविंद मानते थे कि 1947 में भारत का विभाजन कृत्रिम था और यह धर्म के आधार पर किया गया था। 15 अगस्त श्री अरविंद का जन्म दिन भी है। उन्होंने कहा था कि भारत का यह विभाजन एक दिन समाप्त होगा और भारत से अलग हुए पाकिस्तान और बांगलादेश भी फिर एक होंगे। हालांकि यह कब और कैसे होगा, यह अभी नहीं कहा जा सकता। बोकिल ने श्री अरविंदो के विचारों की व्याख्या करते हुए कहा कि उनकी दृष्टि भारत की एकता बहुआयामी थी, जो भौगोलिक के साथ-साथ सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और राष्ट्रवादी भी थी। और यह हमेशा रहेगी। श्री अरविंदो मप्र सोसाइटी के चेयरमैन मनोज शर्मा ने कहा कि श्री अरविंदो ने पांच स्वप्न देखे थे, जिनमें भारत का आर्यावर्त के रूप में फिर से एक होना शामिल है। श्री अरविंदो सोसाइटी मप्र के सचिव सतीश चितवार ने कहा कि श्री अरविंदो का जीवन राष्ट्रप्रेम और भारत माता की आराधना से ओत-प्रोत रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि श्री अरविंदो के जीवन और विचारों से हम सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। एक क्रांतिकारी के रूप में और एक महायोगी के रूप में श्री अरविंद हमारे पथ प्रदर्शक हैं। कार्यक्रम संचालन श्रीमती साधना पाठक ने किया। कार्यक्रम संयोजन मंच के अनिल सकरगाए ने किया।

पद्मश्री प्रो. (डॉ.) अशोक कुमार महापात्रा एम्स भोपाल के नए अध्यक्ष बने

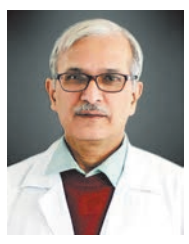

भोपाल। भारत सरकार द्वारा पद्मश्री प्रो. (डॉ.) अशोक कुमार महापात्रा को एम्स भोपाल का अध्यक्ष और संस्थान सभा का सदस्य नामित किया गया है। डॉ. महापात्रा देश के सबसे प्रतिष्ठित न्यूरोसर्जनों में से एक हैं, जिनके नैदानिक अभ्यास, चिकित्सीय शिक्षा और शोध में किए गए अग्रणी योगदानों ने भारत की स्वास्थ्य सेवाओं को नई दिशा दी है। वे एक साधारण परिवार से आते हैं और उनकी पारिवारिक जड़ें पुरी के राजघराने के सलाहकार के रूप में जुड़ी रही हैं। ओडिशा के मूल निवासी डॉ. महापात्रा ने एम्स नई दिल्ली में स्नातकोत्तर प्रशिक्षण प्राप्त किया और एम.एस. (सर्जरी), एम.एच. (न्यूरो सर्जरी) तथा डीएनबी (न्यूरो सर्जरी) की उपाधियाँ अर्जित कीं। अपने गौरवशाली करियर के दौरान उन्होंने एम्स नई दिल्ली में न्यूरोसर्जरी विभागाध्यक्ष, न्यूरोसाइंसेस सेंटर के प्रमुख और अनुसंधान डीन जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। साल 2017 में उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली जब उन्होंने एम्स नई दिल्ली में 16 घंटे लंबे जटिल ऑपरेशन का नेतृत्व करते हुए ओडिशा के दो जुड़े हुए जुड़वां बच्चों 'जगा और कलिया' को अलग किया। यह ऐतिहासिक सर्जरी उन्होंने 30 डॉक्टरों की टीम के साथ सफलतापूर्वक पूरी की। यह उपलब्धि लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज हुई और भारत की चिकित्सा इतिहास में एक मील का पत्थर बनी। डॉ. महापात्रा ने न्यूरोसर्जरी, सिर की चोट, स्कल-बेस सर्जरी, ग्रामीण मस्तिष्क सर्जरी, मिर्गी शल्य चिकित्सा और मस्तिष्क ट्यूमर के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्होंने अब तक 870 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं, 16 पुस्तकें लिखी हैं और 140 से अधिक पुस्तकों में अध्याय लिखे हैं। उनके शोध कार्य को 13,500 से अधिक उद्धरण प्राप्त हुए हैं, उनका एच- इंडेक्स 50 और आई10-इंडेक्स 355 है। वे 1998 से 2008 के बीच भारत में चिकित्सा प्रकाशनों में तीसरे स्थान पर और एम्स में सर्वाधिक प्रकाशन करने वाले वैज्ञानिक रहे। उन्होंने 12 पीएचडी शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया और 20 से अधिक शोध परियोजनाओं का संचालन किया, जिनके लिए उन्हें 10 करोड़ रुपये से अधिक का शोध अनुदान प्राप्त हुआ। सर्जरी कक्ष से परे, उन्होंने चिकित्सा नेतृत्व और संस्थान निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे एम्स भुवनेश्वर के निदेशक रहे, जहाँ उन्होंने संस्थान की नैदानिक और शैक्षणिक नींव को मजबूत किया। इसके अतिरिक्त, वे एसजीपीजीआईएमएस, लखनऊ के निदेशक तथा शिक्षा व अनुसंधान विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के कुलपति भी रहे। उनके असाधारण योगदानों के लिए उन्हें अप्रैल 2025 में भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव स्वतंत्रता दिवस पर भोपाल में करेंगे ध्वजारोहण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव स्वतंत्रता दिवस की 78वीं वर्षगांठ पर 15 अगस्त को राजधानी भोपाल में आयोजित राज्य-स्तरीय समारोह में ध्वजारोहण कर प्रदेशवासियों के नाम संदेश देंगे। इस अवसर पर राजधानी भोपाल सहित जिला मुख्यालयों पर विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियां भी होंगी। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा जबलपुर और उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल शहडोल में ध्वजारोहण करेंगे। मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह रतलाम, मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय धार, मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल भिण्ड, मंत्री श्री राकेश सिंह नर्मदापुरम, मंत्री श्री करन सिंह वर्मा मुरैना, मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह बालाघाट, मंत्री श्रीमती सम्पतिया उइके मंडला, मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट बुरहानपुर, मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना दतिया, मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया मंदसौर, मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत नरसिंहपुर, मंत्री श्री विश्वास सारंग खरगौन, मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ग्वालियर, मंत्री श्री नागर सिंह चौहान अलीराजपुर, मंत्री श्री प्रदुम्न सिंह तोमर शिवपुरी और मंत्री श्री राकेश शुक्ला श्योपुर में ध्वजारोहण करेंगे। मंत्री श्री चैतन्य काश्यप राजगढ़, मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार दमोह, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर सीहोर, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी खंडवा, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री दिलीप जायसवाल सीधी, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल बड़वानी, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल मउगंज, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री नारायण सिंह पंवार रायसेन, राज्यमंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल बैतूल, राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी डिंडोरी, राज्यमंत्री श्री दिलीप अहिरवार अनूपपुर और राज्यमंत्री श्रीमती राधा सिंह सिंगरौली में ध्वजारोहण करेंगे।

एडीजी योगेश देशमुख, राकेश गुप्ता को मिला विशिष्ट सेवा पदक

- छह आईपीएस,6 एसपीएस समेत 21 अधिकारी-कर्मचारी पुलिस पदक से होंगे सम्मानित

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश पुलिस के चार पुलिस अफसरों को विशिष्ट सेवा और 17 को सराहनीय सेवा पदक मिला है। इन आईपीएस, एसपीएस और पुलिस सेवा के अधिकारियों और कर्मचारियों को अगले साल 15 अगस्त पर दिल्ली में इन पदकों से सम्मानित किया जाएगा। विशिष्ट सेवा पदक पाने वाले अफसरों में एमपी के एडीजी योगेश देशमुख, राकेश गुप्ता के अलावा कांस्टेबल देवेन्द्र कुमार कौशल और हेड कांस्टेबल वाल्टर हेनरी एक्का शामिल हैं। एमपी पुलिस को इस साल वीरता पदक नहीं मिल पाया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सराहनीय सेवा और विशिष्ट सेवा पदक के लिए चुने गए अफसरों के वे ही पदनाम सूची में लिखे हैं, जो प्रस्ताव भेजते समय थे। पदक पाने वाले अफसरों में छह आईपीएस, छह एसपीएस और नौ पुलिस मुख्यालय से संबद्ध निरीक्षक, एसआई, एएसआई, हेड कांस्टेबल और कांस्टेबल शामिल हैं।

इन्हें मिला सराहनीय सेवा पदक

- सीमा अलावा डिप्टी कमिश्नर पुलिस
- धर्मेंद्र सिंह भदौरिया डीआईजी
- विजय कुमार खत्री डीआईजी
- आशीष खरे एआईजी
- नीरज पांडेय एएसपी
- रूपेश कुमार द्विवेदी एएसपी
- राजेश सहाय एसपी
- दिनेश कुमार सिंह डीएसपी
- प्रवीण पवार निरीक्षक
- कुंजेश श्रीवास्तव निरीक्षक
- वीरेंद्र सिंह डीएसपी
- मनोज कुमार दुबे निरीक्षक
- मनेता राय निरीक्षक
- अलरिज विन्सेंट सिंह डीएसपी
- राजेंद्र कुमार दुबे एएसआई
- कल्याण सिंह हेड कांस्टेबल
- अशोक राव सावंत एएसआई

फार्महाउस में 16 घंटे बंधक बनाया, 50 हजार लेकर छोड़ा

भोपाल में 'मछली परिवार' के पीड़ित व्यक्ति का खुलासा, लड़कियों को भी बंद कर रखा था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के ड्रग तस्कर यासीन मछली के चाचा शारिक मछली का एक और पीड़ित सामने आया है। उन्होंने आरोप लगाया है कि शारिक ने अगवा कर हथाईखेड़ा के फार्महाउस में 16 घंटे बंधक बनाया। बेरहमी से पीटा और छोड़ने के एवज में पचास हजार रुपए की फिरौती वसूली। पूरे मामले की शिकायत अशोका गार्डन थाने में की गई है।

15 दिन से ज्यादा समय बीत जाने के बाद भी शारिक पर एफआईआर दर्ज न करने का आरोप पुलिस पर लगाया गया है। पीड़ित राजेश तिवारी रेलवे के कर्मचारी रहे हैं। उनका आरोप है कि शारिक को एक मंत्री का संरक्षण था। जिसके चलते राजेश के खिलाफ रेप और हत्या के प्रयास के दो फर्जी केस दर्ज कराए गए। हत्या के प्रयास के मामले में फरियादी शारिक का करीबी है।

केस दर्ज होने के कारण उन्हें रेलवे की नौकरी से हाथ धोना पड़ा। राजेश का कहना है कि शारिक उनसे केवल इस वजह से नाराज था क्योंकि कॉलोनी में लगाई जाने

शारिक मछली

वाली गणेश झांकी में शारिक और उसके करीबी मंत्री का पोस्टर या बैनर नहीं लगाया गया था।

दुकान तुड़वाई, कब्जे की कोशिश की: राजेश तिवारी ने मीडिया को बताया कि 2021 में शारिक मेरी झांकी पर आया था। जहां उसने दबाव बनाया कि झांकी में उसका और उसके करीबी मंत्री का बैनर लगाया जाए। मैंने कहा- मैं धार्मिक कार्य में किसी राजनीतिक व्यक्ति का बैनर-पोस्टर नहीं लगाऊंगा। इसी बात को लेकर शारिक मछली मुझसे रंजिश रखने लगा। कुछ समय बाद शारिक ने अशोका गार्डन इलाके में बनी मेरी दुकान को अतिक्रमण बताकर तुड़वा दिया।

इस दुकान पर वह कब्जा करना चाहता था, लेकिन मैंने उस स्थान पर एक मंदिर बना दिया। 29 अक्टूबर 2021 को शारिक और उसके तीन साथियों ने लाल रंग की थार कार से रिवॉल्वर अड़ाकर अशोका गार्डन इलाके से मुझे किडनैप कर लिया।

वहां से चारों आरोपी मुझे हथाईखेड़ा के फार्महाउस पर ले गए। यहां मुझे करीब 16 घंटे तक बंधक बनाकर रखा गया। बेल्ट और डंडों से पीटा गया। मेरे से जबरन ऑनलाइन 50 हजार रुपए वसूल लिए गए।

राजेश का दावा- पुलिस ने शिकायत दर्ज नहीं की: राजेश तिवारी ने दावा किया कि जब उन्हें फार्महाउस में बंधक रखा गया, तब वहां कुछ लड़कियां भी मौजूद थीं, जिन्हें अलग-अलग कमरों में बंद कर रखा गया था। उनके साथ भी दुराचार किया गया था। जब उन्हें छोड़ा गया, तो पुलिस ने उनकी शिकायत तक दर्ज नहीं की। उन्होंने बताया- मेरी मौजूदगी में उस व्यक्ति को तत्कालीन टीआई ने बुलाया, जिसके मोबाइल पर शारिक ने पचास हजार रुपए की रकम ट्रांसफर की थी। उसने बयान दिया कि यह रकम तिवारी जी ने मुझे बकरा खरीदने के एवज में दी है। मैं पंडित आदमी हूं। ऐसा बयान देकर वह मेरे और मेरे परिवार की साख को खराब करना चाहता था। खास बात यह है कि पुलिस ने उसकी बात पर यकीन किया और बिना किसी कार्रवाई के उसे छोड़ दिया।

फार्महाउस में मिला था संदिग्ध एम्युनेशन बॉक्स: पिछले दिनों मछली परिवार के पांच ठिकानों को पुलिस और प्रशासन की टीम ने ध्वस्त किया था। इस दौरान हथाईखेड़ा वाले फार्महाउस से पुलिस को एक अवैध राइफल और संदिग्ध बॉक्स मिला था।

कविता

प्यारा हिन्दुस्तान हमारा

डॉ. जीवन एस. रजक

चन्द्र धरा के उत्तुंग शिखर पर, तिरंगा होता शोभित प्यारा।
संदेहों के तमस मिटाकर, अब छाया अक्षय उजियारा।।
भारत के बढ़ते वैभव से, आलोकित होता जग सारा।
नित नूतन पथ बढ़ता जाता, प्यारा हिन्दुस्तान हमारा।।
कुरूक्षेत्र की पुण्यधरा से, उपदेशों का उत्थान हुआ।
संपूर्ण चराचर को हमने, मानवता का प्रतिमान दिया ।।
भगवान कृष्ण ने बतलाया, जीवन का सारा ज्ञान हमें।
सिखलाया संचित कर रखना, राष्ट्र का स्वाभिमान हमें।।
गीता ज्ञान प्रवाहित करता, राष्ट्रहितों की अन्तर्धारा।
नित नूतन पथ बढ़ता जाता प्यारा हिन्दुस्तान हमारा।।

फिर बार-बार गजनी आया, सोमनाथ तक लूट मचाया।
भारत के सामर्थ्य को, किंचित डिगा नहीं पाया।।
पृथ्वीराज ने मातृभूमि का, शत्-शत् सम्मान बढ़ाया।
प्राण दान गौरी को देकर, नैतिकता का पाठ पढ़ाया।।
तजते-तजते प्राण स्वयं के, जय-जय हिन्दुस्तान पुकारा।
नित नूतन पथ बढ़ता जाता, प्यारा हिन्दुस्तान हमारा।।
कोशिश बहुत की बख्तियार ने, पर कामयाब न हो पाया।
वेदों की एक ऋचा को भी, वह लेकिन मिटा नहीं पाया ।।
हमने अपनी जीवटता से, बैद्धिकता का संचार किया।
मातृभूमि के हित में हमने, हर संकट का प्रतिकार किया ।।
धरती से अंबर तक गूंजा, भारत माँ का जय-जय कारा ।
नित नूतन पथ बढ़ता जाता, प्यारा हिन्दुस्तान हमारा ।।
हल्दी घाटी में राणा ने, मातृभूमि को स्वाभिमान दिया।
देशभक्त पन्ना माँ ने, निज सुत का बलिदान दिया।।
वीर शिवाजी ने भारत में, स्वराज को ज्योतिर्मान किया।
रानी झाँसी ने देश पर, अपना सब कुर्बान किया ।।
प्राण अर्पित किए राष्ट्र पर, बहती राष्ट्रप्रेम की धारा।
नित नूतन पथ बढ़ता जाता, प्यारा हिन्दुस्तान हमारा।।
राम प्रतिष्ठित हुए अवध में, रामराज्य फिर से आया।
दशों दिशाओं ने मिलकर, यशोगान भारत गाया।।
सब संताप त्याग भारत फिर, दुनिया को मार्ग दिखाता है।
परम लक्ष्य पाने को हर पल, नित आगे बढ़ता जाता है।।
कहलाएगा नव युग में भारत, नभ का ज्योतिर्मयी सितारा।
नित नूतन पथ बढ़ता जाता, प्यारा हिन्दुस्तान हमारा।।

स्वतंत्रता के मायने?

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

भारत सरकार ने हमारे सुझाव पर कोई ध्यान नहीं दिया। हमारे देश के व्यापारी कितने राष्ट्रभक्त हैं, उनके राष्ट्रवाद के बारे में मैं कई बार लिख चुका हूँ। डोकलाम विवाद, गलवान घाटी विवाद के समय भी भारत सरकार व गृहमंत्री ने 28 चीनी ऐप को प्रतिबंधित किया था जो एक दिखावा मात्र था। जब चीन के कई हजार ऐप भारत में क्रियाशील हैं तो 28 के बंद होने के क्या फायदे, और कुछ समय बाद वह प्रतिबंध भी हटा लिया गया। उस समय हमारे देश के व्यापारी वर्ग ने काफी प्रचार किया कि चीनी माल का बहिष्कार करें, अखबार में प्रायोजित समाचार छपवाये गये कि कई सौ करोड़ का सामान चीन से आना कम हो गया परंतु यह सब न केवल प्रचार था बल्कि धोखा भी था। हमारे देश के कई राष्ट्रवादी व्यापारियों ने चीनी माल पर भारतीय ठप्पा लगाया और उसे देश में बेचा। याने आपदा में अवसर खोज लिया यही मोदीवाद भी है।

15 अगस्त प्रतिवर्ष की भांति फिर हमारे सामने है और देशवासी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के लाल किले से भाषण को सुनेंगे। वैसे तो देश पिछले 10 वर्षों से उनके भाषण सुनकर समृद्ध हो रहा है परंतु इस वर्ष का उनका भाषण संभव है कि कुछ वस्तुपरक हो, क्योंकि जो वैश्विक परिस्थितियाँ बन रही हैं वे चिंताजनक हैं और उनका हल क्या प्रधानमंत्री जी देश को बताते हैं यह प्रतीक्षित है। पिछले 2 अगस्त को उन्होंने अपने कार्यकाल के 11वें वर्ष में उस स्वदेशी शब्द का इस्तेमाल किया जो एक दशक से उनकी पार्टी और सरकार के लिये अत्याज्य विषय था,बीच में कई ऐसे अवसर आये जैसे डोकलाम संघर्ष, चीन के साथ गलवान घाटी का सैन्य टकराव, रूस-यूक्रेन युद्ध, चीन की वन बेल्ट वन रोड परियोजना, परंतु प्रधानमंत्री जी को उस स्वदेशी शब्द की याद नहीं आई जिस स्वदेशी की सीढ़ी पर चढ़कर भाजपा ने सरकार बनाई व वह प्रधानमंत्री बने थे। 2 अगस्त के उनके संबोधन में उन्होंने वैश्विक परिस्थितियों का संकेत देते हुए कहा कि देश दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है और दुनिया के देश अपने-अपने हितों पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं इसलिये भारत को भी सजग रहना है। हम संकल्प लें कि हमारे घर में जो कुछ भी नया सामान आयेगा वह स्वदेशी ही होगा। हमारे किसान, लघु उद्योग, नौजवानों को रोजगार के हित हमें सर्वोपरि हैं। यद्यपि उन्होंने अमेरिका द्वारा भारत पर घोषित रूप से बढ़ाये जाने वाले टैरिफका स्पष्ट उल्लेख तो नहीं किया परंतु संकेत तो दिया ही है।

अमेरिकी राष्ट्रपति श्री ट्रंप ने भारत से टैरिफ की वार्ता के लिये 7 अगस्त 25 की तारीख तय की थी और वार्ता सफल न होने के कारण 7 अगस्त को भारतीय सामानों पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया। याने 25 प्रतिशत टैरिफ और उसके ऊपर 25 प्रतिशत पेनाल्टी। हालाँकि यह 25 प्रतिशत का अतिरिक्त टैरिफ 21 दिन के बाद लागू होगा, याने 28 अगस्त के बाद। अमेरिका ने भारत के अलावा केवल ब्राजील पर 50 प्रतिशत टैक्स लगाया है। यहाँ तक कि चीन पर भी 30 प्रतिशत टैरिफ है।

अमेरिका अब अपने देश में विदेशी सामान और विदेशी कर्मचारियों और नागरिकों की संख्या को घटायेगा यह संकेत तो ट्रंप के राष्ट्रपति बनते समय से ही मिल चुके थे। मैंने तो यह चेतावनी भारत सरकार को अपने कई लेखों, भाषणों में कई बार की थी कि अब अमेरिका अपने सदियों पुरानी अमेरिका फर्स्ट की नीति पर वापिस जायेगा। जिस प्रकार 16वीं सदी में अमेरिका ने श्री अमेरिकन बॉय अमेरिकन्य का नारा लगाया था वह पुनरू शुरू करेगा। उसकी वजह भी है कि पिछले लगभग 50-60 वर्षों में अमेरिका की अर्थव्यवस्था कमजोर हुई है। अमेरिका निसंदेह एक संपन्न देश है परंतु उतना ही कर्जदार भी है और पिछले कई दशकों से उसने अपनी साहूकारी और आर्थिक कूटनीति को कम किया था जिसे चीन ने भरा है। अमेरिका और चीन के बीच में जो व्यापार के रिश्ते शुरू हुए उसके बाद चीनी माल से अमेरिका के बाजार भर गये। जिन सामानों को चीन बनाता है उन्हें अभी तक अमेरिका नहीं बनाता था, अमेरिका मुख्यत: हथियार, वायुयान जैसी चीजों का निर्यात करता है। ब्राजील पर टैरिफबढ़ाने के बाद अमेरिकी विमान कंपनी को सीधे 150 विमान का आर्डर मिला जो लगभग जो लगभग डेढ़ दो लाख करोड़ के होते हैं।

भारत सरकार ने हमारे सुझाव पर कोई ध्यान नहीं दिया। हमारे देश के व्यापारी कितने राष्ट्रभक्त हैं, उनके राष्ट्रवाद के बारे में मैं कई बार लिख चुका हूँ। डोकलाम विवाद, गलमान घाटी विवाद के समय भी भारत सरकार व गृहमंत्री ने 28 चीनी ऐप को प्रतिबंधित किया था जो एक दिखावा मात्र था। जब चीन के कई हजार ऐप भारत में क्रियाशील हैं तो 28 के बंद होने के क्या फायदे, और कुछ समय बाद वह प्रतिबंध भी हटा लिया गया। उस समय हमारे देश के व्यापारी वर्ग ने काफी प्रचार किया कि चीनी माल का बहिष्कार करें, अखबार में प्रायोजित समाचार छपवाये गये कि कई सौ करोड़ का सामान चीन से आना कम हो गया परंतु यह सब न केवल प्रचार था बल्कि धोखा भी था। हमारे देश के कई राष्ट्रवादी व्यापारियों ने चीनी माल पर भारतीय ठप्पा लगाया और उसे देश में बेचा। याने आपदा में अवसर खोज लिया यही मोदीवाद भी है।

आज भी भारत के बाजारों में इतना चीनी माल भरा पड़ा है कि अगर कई माह तक चीनी सामान न आये तब भी चीनी सामान समाप्त न हो। चीनी माल भारत व दुनिया को सस्ता पड़ता है क्योंकि चीन के साम्यवादी दल की तानाशाही है, वहाँ न कोई हड़ताल हो सकती है और न कोई विरोध हो सकता है, वहाँ श्रम सस्ता है। अब अमेरिका टैरिफ वृद्धि की घोषणा के बाद प्रधानमंत्री 31 अगस्त को चीन की यात्रा पर जाने वाले हैं। उसी चीन की यात्रा पर जिसे सदैव भाजपा और उसकी सरकारें शत्रु मानती रही हैं। वही चीन जो अरुणाचल को चीनी क्षेत्र का भूभाग बताता है। गलवान घाटी व डोकलाम में भारतीय सीमाओं का उल्लंघन करता है। जो चीन खुलकर पाकिस्तान का समर्थन करता है और तिब्बत को जिजांग प्रदेश कहकर कब्जाए बैठा है। यह देश की विदेश नीति और कूटनीति की स्पष्ट कमजोरी है। दुनिया का कोई भी देश अपनी विदेश नीति अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर बनाता है और उन्हें सर्वोपरि स्थान देता है। दुनिया के संपन्न व ताकतवर देश तो अपनी विदेश नीति को कई दशकों पूर्व अनेकों विकल्पों के साथ तैयार रखते हैं। कितना विचित्र है कि अभी कुछ दिन पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने संसद में तिब्बत व भारतीय भूभाग को लेकर स्व. नेहरू की आलोचना की थी और क्या वह अब स्वतरू चीन जाकर नेहरू नीति के ऊपर मुहर लगायेंगे? यह स्थिति तब है जब वे पिछले एक वर्ष से लगभग केवल विदेश मंत्री का काम कर रहे हैं और अघोषित रूप से देश की सरकार को श्री अमित शाह चला रहे हैं। वे अफ्रीका के किसी छोटे देश से सम्मान ग्रहण कर अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं और भारतीय मीडिया में उसे प्रमुखता से परोसा जाता है। ब्रिटिश के पूर्व प्रधानमंत्री ने कहा कि ट्रंप ने पुतिन के नरसंहार की कीमत चुकाने को भारत को मजबूर किया है, इसके गंभीर अर्थ हैं।

15 अगस्त के दिन हम क्या कहने के अधिकारी हैं। कहा जा रहा है कि भारत दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था बन गया है, तथा तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ रहा है। परंतु क्या यह भी सत्य नहीं है कि भारत दुनिया में प्रतिव्यक्ति आमदनी के मामले में 140वें स्थान पर है? क्या यह सत्य नहीं है कि हमारे देश में 85 करोड़ लोग 5 किलो अनाज के लिये मोहताज हैं? कई हजार किसान, बेरोजगार, कर्जदार प्रतिवर्ष आत्महत्या करने को लाचार हैं। 1.25 लाख प्राथमिक स्कूल बंद हो गये, 54000 अति जर्जर हैं, हजारों ग्रामीणों के बच्चे पिछले कई महीनों से शाला भवनों की शिक्षा से वंचित हैं।

मुझे खुशी होगी कि भारत स्वदेशी की नीति पर आये। परंतु संघ व भाजपा की सरकार यही कहती है कि लोग विदेशी माल खरीदना बंद करें, तो अपने आप स्वदेशी आ जायेगा। वह भूल जाते हैं कि वह महात्मा गांधी का नेतृत्व था जिसके चलते देश ने खादी पहनना, खादी बनाना व बेचना स्वीकार किया था, जिसके परिणामस्वरूप न केवल ब्रिटेन के लंकाशायर, मेनचेस्टर के कारखाने बंद हो गये थे बल्कि ब्रिटिश हुकूमत की राजस्व आय आधी से भी कम हो गई थी। परंतु उन महात्मा गांधी का भाजपा व उनकी सरकार को नाम लेना भी स्वीकार नहीं।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने अमेरिकी जनता से अपील की है कि वह अमेरिकी माल को खरीदें व इस्तेमाल करें व साथ में विदेशी माल को टैरिफ के हथियार से लगभग शून्य के नजदीक ला दिया। अमेरिकी सरकार भी अपने आयात को रोकने के लिये कदम उठा रही है व अपने नागरिकों से अपील कर रही है पर भारत सरकार ने सरकारी तौर पर ऐसा कोई कोई कदम अभी तक नहीं उठाया, केवल वह उसे देशवासियों के पाले में डाल देती है। अभी तक तो यह दो मुखी जबान ही देखने व सुनने में आई है। अब अगर लाचार होकर ही सही प्रधानमंत्री जी विदेशी माल के आयात पर रोक लगायें, उसके आयात पर चार गुना टैक्स बढ़ायें तो आयात कम होगा और देश की जनता भी खुशी खुशी सहयोग करेगी परंतु प्रधानमंत्री जी ब्रिटेन से समझौता (एफटी.ए.) करेंगे, रोल्स रोयल कारों, स्काच और ब्रांडी, विलासिता के सामान आयात करेंगे। उस पर टेक्स आधे से भी कम करेंगे। सरदार पटेल की प्रतिमा चीन से मंगायेंगे। अपने इस्तेमाल के लिये 8500 करोड़ का विमान अमेरिका से मंगायेंगे और देश में विदेशी माल प्रयोग न करने की अपील करेंगे तो यह केवल हास्यास्पद ही होगा।

मुझे खुशी होगी कि प्रधानमंत्री जी 15 अगस्त जो कि स्वतंत्रता दिवस है, को अपने आपको स्वतंत्र महसूस कर सार्वजनिक रूप से अपनी भूलों को स्वीकारें और उन नीतियों का ऐलान करें जो देश के हित में हैं, तो देशवासी उनका स्वागत करेंगे। अगर प्रधानमंत्री जी उस डब्ल्यूटीओ के समझौते जिसे दो दशक पूर्व वही डंकल प्रस्ताव के नाम से नकारते थे, को त्यागने की घोषणा करें तो देश उनका स्वागत करेगा तथा भारत सही अर्थों में राजनैतिक, कूटनैतिक और आर्थिक आजाद देश बनेगा।

स्वतंत्रता आंदोलन और संघ कार्यकर्ता की प्रतिज्ञा

स्वतंत्रता दिवस विशेष

लोकेन्द्र सिंह

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं।)

संघ की प्रतिज्ञा थी- मैं हिन्दूराष्ट्र को स्वतंत्र कराने के लिए 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' का घटक बना हूँ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक के बारे में अज्ञानता से घिरे लोग अकसर यह प्रश्न पूछते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन में संघ की क्या भूमिका रही है? कुछ लोग इससे भी आगे बढ़ जाते हैं और पूछते हैं कि संघ के किसी एक कार्यकर्ता का नाम ही बता दीजिए, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया हो? संघ की स्थापना जिन्होंने की, वे डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार स्वयं ही जन्मजात देशभक्त थे। डॉ. हेडगेवार क्रांतिकारी भी रहे, कांग्रेस में रहकर राजनीतिक संघर्ष किया और जेल भी गए। बाद में, देश की सर्वांग स्वतंत्रता और स्वतंत्रता को स्थायी बनाने के उद्देश्य से उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। डॉ. हेडगेवार अकेले नहीं हैं, अपितु स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लेनेवाले संघ के ज्ञात-अज्ञात कार्यकर्ताओं की लंबी श्रृंखला है। जो संगठन अपने कार्यकर्ताओं को यह शपथ दिलाता हो कि मैं हिन्दूराष्ट्र को स्वतंत्र कराने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का घटक बना हूँ, उसने कितने ही लोगों के मन में स्वतंत्रता प्राप्ति का भाव भरा होगा, उसकी सहज कल्पना की जा सकती है।

भारत में प्रतिज्ञा का बहुत महत्व है। हमें भीष्म प्रतिज्ञा का स्मरण है। राजा हरिशचंद्र की सत्य बोलने की प्रतिज्ञा ध्यान है। मुगलिया सल्तनत के अत्याचार के विरुद्ध महाराण प्रताप की प्रतिज्ञा को कौन भूल सकता है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने शिव को साक्षी मानकर प्रतिज्ञा करके 'स्वराज्य' की नींव रखी, जिसे साकार करने में संपूर्ण समाज प्राणपण से जुट गया। संघ के स्वयंसेवक भी इसी भाव के साथ प्रतिज्ञाबद्ध होते हैं कि वह जो प्रतिज्ञा ले रहे हैं, उसको पूर्ण करने में अपना सर्वस्व देंगे और प्रतिज्ञा को आजन्म निभाएंगे। मार्च 1928 में नागपुर के निकट एक पहाड़ी पर स्वयंसेवकों को एकत्र करके, भगवाध्वज के समक्ष प्रतिज्ञा का पहला कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया था। देश की पूर्ण स्वतंत्रता एवं विकास के लिए स्वयंसेवकों को वीरव्रती बनाने के निमित्त आयोजित इस प्रथम कार्यक्रम में 99 स्वयंसेवकों ने प्रतिज्ञा की थी। इस अवसर पर डॉ. हेडगेवार ने संघ के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए जो भाषण दिया, वह स्वतंत्रता प्राप्ति की संघ की आकांक्षा को स्पष्टतौर पर व्यक्त करता है। उन्होंने कहा- हमारा उद्देश्य हिन्दू राष्ट्र की पूर्ण स्वाधीनता है। संघ का निर्माण इसी महान लक्ष्य के लिए हुआ है। इस स्पष्ट अभिव्यक्ति के बाद कहने के लिए कुछ और भी बचता है क्या? यह भी समझना होगा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता अपनी नित्य प्रार्थना में कहते हैं कि इस राष्ट्र को परम वैभव पर लेकर जाना है। क्या कोई पराधीन राष्ट्र परम वैभव पर जा सकता है? स्पष्ट है कि भारत की स्वतंत्रता का लक्ष्य संघ की स्थापना में निहित था।

डॉक्टर साहब ने 1929 में वर्धा में आयोजित प्रशिक्षण वर्ग में भी स्वयंसेवकों एवं नागरिकों की एक सभा में प्रखरता के साथ कहा- ब्रिटेन की सरकार ने अनेक बार भारत को स्वतंत्र करने का आश्वासन दिया है, परंतु वह झूठा साबित हुआ। अब यह साफ हो गया कि भारत अपने बल पर स्वतंत्रता प्राप्त करेगा। याद रहे कि डॉ. हेडगेवार ने महात्मा गांधी के आह्वान पर 'नमक सत्याग्रह' में शामिल होकर विदर्भ प्रांत में 1930 में 'जंगल सत्याग्रह' किया। इस आंदोलन में उनके साथ अनेक प्रमुख स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया। सत्याग्रहियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया और जेल भेज दिया। डॉक्टर साहब को नौ माह का कठोर कारावास दिया गया। इससे पूर्व 1921 के आंदोलन में भी डॉक्टर साहब को जेल की सजा हुई थी। महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन को मध्यभारत में सफल बनाने के लिए स्वयंसेवकों ने अथक प्रयास किया। संघ के सरकार्यवाह जीएम हुद्दार, नागपुर के संघचालक अप्पा साहेब हलदे, सिरपुर के संघचालक बाबूराव वैद्य, संघ के सरसेनापति मार्तंडराव जोग के साथ संघ के अन्य प्रमुख कार्यकर्ताओं के आंदोलन में शामिल होने के कारण चार-चार माह का कारावास मिला।

अपनी स्थापना के कई वर्षों बाद कांग्रेस को जनमानस के दबाव के कारण 31 दिसंबर, 1929 को लाहौर में रावी के तट पर पहली बार 'पूर्ण स्वराज्य' का प्रस्ताव पारित करना पड़ा। याद रहे कि डॉ. हेडगेवार ने 1920 में नागपुर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में ही पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पारित कराने का प्रयास किया था। उन्होंने कांग्रेस की प्रस्ताव समिति के सामने सुझाव रखा था कि कांग्रेस का उद्देश्य भारत को पूर्ण स्वतंत्र कर भारतीय गणतंत्र की स्थापना करना और विश्व को पूंजीवाद के चंगुल से मुक्त करना होना चाहिए। बहरहाल, सम्पूर्ण स्वतंत्रता का उनका सुझाव कांग्रेस ने 9 वर्ष बाद 1929 के लाहौर अधिवेशन में स्वीकृत किया। कांग्रेस का यह निर्णय संघ के घोषित उद्देश्य के अनुरूप था। इसलिए इससे आनंदित होकर सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार ने संघ की सभी शाखाओं को 26 जनवरी, 1930 को कांग्रेस का अभिनंदन करने, राष्ट्रध्वज का वंदन करने और स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए निर्देशित किया। साथ ही यह भी कहा कि शाखाओं पर भाषण करके स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ एवं महत्व को समझाया जाए। सरसंघचालक के निर्देशानुसार, संघ की सभी शाखाओं पर 26 जनवरी, 1930 को सायं 6 बजे स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

संघ के स्वयंसेवकों ने 1942 के 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' आंदोलन में भी सहभागिता की। 8 अगस्त, 1942 को मुंबई के गोवलिया टैंक मैदान पर कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गांधीजी ने आंदोलन की घोषणा की। दूसरे दिन से ही देशभर में आंदोलन प्रारंभ हो गया। विदर्भ में बावली (अमरावती), आष्टी (वर्धा) और चिमूर (चंद्रपुर) में हुए आंदोलनों में संघ के स्वयंसेवकों ने ही नेतृत्व किया। चिमूर के समाचार बर्लिन रेडियो पर भी प्रसारित हुए। यहां के आन्दोलन का नेतृत्व कांग्रेस के उद्धवराव कोरेकर और संघ के अधिकारी दादा नाईक, बाबूराव बेगडे, अण्णाजी सिरास ने किया। चिमूर के इस आन्दोलन में अंग्रेज की गोली से एकमात्र मृत्यु बालाजी रायपुरकर की हुई, जो संघ स्वयंसेवक थे। इस आंदोलन के अंतर्गत राजस्थान में प्रचारक जयदेवजी पाठक, आर्वी (विदर्भ) में डॉ. अण्णासाहब देशपांडे, जशपुर (छत्तीसगढ़) में रमाकांत केशव (बालासाहब) देशपांडे, दिल्ली में वसंतराव ओक एवं चंद्रकांत भारद्वाज और पटना (बिहार) में अधिवक्ता कृष्ण वल्लभप्रसाद नारायण सिंह (बबुआजी) ने भाग लिया।अंग्रेज सरकार संघ के बढ़ते प्रभाव से घबरा गई थी। इसलिए उसने संघ पर आंशिक प्रतिबंध लगाने शुरू कर दिए ताकि संघरूपी आंदोलन को रोका जा सके। गुप्तचर विभाग की रिपोर्ट के आधार पर अंग्रेज सरकार ने सबसे पहले 15 दिसंबर, 1932 को एक सर्कुलर निकालकर सरकारी कर्मचारियों को संघ में भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया। वहीं, 5 अगस्त, 1940 को ब्रिटिश सरकार ने संघ की सैनिक वेशभूषा और प्रशिक्षण पर पूरे देश में प्रतिबंध लगा दिया। क्योंकि सरकार को गुप्तचर रिपोर्ट में यह जानकारी मिलने लगी थी कि संघ के स्वयंसेवक पूर्ण स्वतंत्रता की ओर तेजी से अग्रसर हैं। राष्ट्रीय आंदोलनों में बढ़-चढ़ कर सहभागिता कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि संघ के प्रचारक बाबा साहब आप्टे ने 12 दिसंबर, 1943 को जबलपुर में गुरुदक्षिणा उत्सव पर स्वयंसेवकों से कहा- अंग्रेजों का अत्याचार असहनीय है, देश को स्वतंत्रता के लिए तैयार हो जाना चाहिए। संघ अपनी स्थापना के समय से ही देश की स्वतंत्रता का स्वप्न लेकर चल रहा था। भारत की सर्वांग स्वतंत्रता के लिए संघ के स्वयंसेवक प्रतिज्ञाबद्ध थे इसलिए अवसर आने पर उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलनों में सहभागिता की, जेल गए और बलिदान भी दिया।

स्वतंत्रता दिवस विशेष

स्वतंत्रता से स्वाधीनता की ओर व्यक्ति व राष्ट्र को सशक्त बनाने वाली आजादी

संदीप सृजन

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

हम भारतीय लोगों की स्वतंत्रता स्वच्छंदता में नहीं बदले,बल्कि स्वाधीनता में रुपांतरित हो यह वाक्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के मूल सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करता है। यह महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित है, जहां उन्होंने स्वतंत्रता को मात्र राजनीतिक आजादी तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे आत्म-नियंत्रण, आत्म-निर्भरता और नैतिक जिम्मेदारी से जोड़ा। स्वतंत्रता का अर्थ है गुलामी से मुक्ति, लेकिन यदि यह स्वच्छंदता में बदल जाए, तो यह समाज के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकती है। इसके विपरीत, स्वाधीनता का अर्थ है ऐसी आजादी जो व्यक्ति और राष्ट्र को सशक्त बनाए, जहां स्वतंत्रता का उपयोग सामूहिक कल्याण के लिए हो। यह उद्धरण आज के भारत के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, जहां हम 78 वर्षों से स्वतंत्र हैं, लेकिन क्या हमारी स्वतंत्रता स्वाधीनता में रूपांतरित हो पाई है?

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जड़ें गहरी हैं। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 की आजादी तक, लाखों भारतीयों ने बलिदान दिए। लेकिन महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता को मात्र ब्रिटिश शासन से मुक्ति नहीं माना हिंद स्वराज में उन्होंने स्पष्ट किया कि सच्ची स्वतंत्रता आत्म-शासन है, जहां व्यक्ति अपने मन, शरीर और आत्मा पर नियंत्रण रखे। गांधीजी ने कहा था कि स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि हम जो चाहें करें, बल्कि यह कि हम सही कार्य करें। इसी क्रम में, स्वच्छंदता का खतरा उन्होंने चेतावनी के रूप में उठाया। स्वच्छंदता वह स्थिति है जहां व्यक्ति बिना किसी नैतिक बंधन के कार्य करता है, जो अराजकता को जन्म देती है।

1942 के क्विट इंडिया आंदोलन में गांधीजी ने कहा, हम भारत को आजाद करेंगे या प्रयास में मर जाएंगे। लेकिन उन्होंने यह भी जोड़ा कि आजादी के बाद भारतीयों को स्वछंद नहीं होना चाहिए। उदाहरणस्वरूप, गांधीजी ने ग्राम स्वराज की अवधारणा दी, जहां गांव आत्म-निर्भर हों। यह स्वाधीनता का प्रतीक है, जहां स्वतंत्रता आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आत्म-निर्भरता में बदल जाए। नेहरू, पटेल और अन्य नेताओं ने भी इस विचार को अपनाया। नेहरू की डिस्कवरी ऑफ इंडिया में स्वतंत्रता को रचनात्मक ऊर्जा के रूप में देखा गया, न कि विनाशकारी स्वछंदता के रूप में। ऐतिहासिक रूप से, कई राष्ट्रों में स्वतंत्रता स्वच्छंदता में बदल गई। फ्रांसीसी क्रांति (1789) ने स्वतंत्रता दी, लेकिन स्वच्छंदता के कारण रक्तपात हुआ। रूसी क्रांति (1917) में भी यही हुआ। भारत ने इससे सीख ली। संविधान सभा में डॉ. आंबेडकर ने कहा कि स्वतंत्रता का दुरुपयोग लोकतंत्र को नष्ट कर सकता है। इसलिए, भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों के साथ कर्तव्य भी जोड़े गए, ताकि स्वतंत्रता स्वच्छंदता न बने। स्वतंत्रता का अर्थ है बाहरी बंधनों से मुक्ति। भारत में यह ब्रिटिश उपनिवेशवाद से आजादी थी। लेकिन यदि यह स्वच्छंदता में बदल जाए, तो व्यक्ति समाज के नियमों को ताक पर रख देता है। स्वच्छंदता वह है जहां मैं जो चाहूं, करूं का सिद्धांत हावी हो। इसके विपरीत, स्वाधीनता आत्म-निर्भरता है। यह आत्मनिर्भर भारत अभियान की तरह है, जहां स्वतंत्रता उत्पादकता में बदलती है। स्वाधीनता में व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों को समझता है। प्लेटो की रिपब्लिक में स्वतंत्रता को न्याय से जोड़ा गया, जहां बिना नियंत्रण की आजादी अराजकता है। भारतीय दर्शन में, गीता कहती है- योगः कर्मसु कौशलम् -कार्य में कुशलता, जो स्वाधीनता का आधार है।आज का भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, लेकिन क्या हमारी स्वतंत्रता स्वाधीनता में रूपांतरित हो रही है? एक ओर, डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया जैसे अभियान स्वाधीनता की दिशा दिखाते हैं। स्टार्टअप संस्कृति ने युवाओं को स्वतंत्र बनाया, लेकिन आत्म-निर्भर भी। उदाहरणः पेटीएम, ओला जैसी कंपनियां, जो विदेशी निर्भरता से मुक्ति देती हैं।लेकिन स्वछंदता के खतरे भी हैं। सोशल मीडिया पर फेक न्यूज का प्रसार स्वतंत्रता का दुरुपयोग है। 2020 के दिल्ली दंगों में सोशल मीडिया ने स्वच्छंदता दिखाई, जहां अभिव्यक्ति की आजादी हिंसा में बदली। पर्यावरण के क्षेत्र में, प्लास्टिक का अंधाधुंध उपयोग स्वछंदता है, जबकि स्वच्छ भारत अभियान स्वाधीनता की ओर कदम है। गांधीजी ने स्वच्छता को स्वतंत्रता से ऊपर माना, जैसा की एक उद्धरण में कहा गयाः स्वच्छता राजनीतिक स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा में, स्वतंत्रता छात्रों को विचार करने की आजादी देती है, लेकिन स्वछंदता कॉपिंग और अनुशासनहीनता में बदलती है। नई शिक्षा नीति स्वाधीनता की दिशा है, जहां कौशल-आधारित शिक्षा आत्म-निर्भरता सिखाती है। राजनीतिक रूप से, चुनावी स्वतंत्रता लोकतंत्र की ताकत है, लेकिन वोट बैंक पॉलिटिक्स स्वछंदता है।

स्वतंत्रता एक यात्रा है, जो स्वाधीनता पर समाप्त होनी चाहिए। भारत ने 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन स्वाधीनता अभी अधर में है। हमें गांधीजी, नेहरू और आंबेडकर के विचारों से प्रेरणा लेनी चाहिए। यदि हम स्वच्छंदता से बचें और आत्म-निर्भरता अपनाएं, तो भारत विश्व गुरु बन सकता है। यह रूपांतरण व्यक्तिगत स्तर से शुरू होता है, प्रत्येक भारतीय अपनी स्वतंत्रता को जिम्मेदारी से जोड़े। तभी हम सच्चे अर्थ में स्वाधीन होंगे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

विजी श्रीवास्तव

लेखक व्यंग्यकार हैं।

स्वतंत्रता दिवस की बूंदी और ट्रिलियन के शून्य

आज पंद्रह अगस्त है। अंग्रेजों ने आज ही के दिन अपनी पारी समाप्ति की घोषणा की थी। वे इससे पहले बटोर बटार कर, सोने की चिड़िया के पंख, उसके अंडे, घोंसला और बीट तक ले जा चुके थे। अंग्रेजनों को तो अंग्रेजों के साथ जाना ही था। बस अंग्रेजी छोड़कर वो सब कुछ ले गए। हम उनका विरोध, आज के दिन अंग्रेजी शराब की दुकानें बंद रख कर करते हैं। क्योंकि सरकार चाहती है कि आज के दिन दूसरे नशे छोड़कर हम केवल देश भक्ति के नशे में चूर रहें।

स्वतंत्रता दिवस पर वॉट्सेपी बधाई की बाढ़ आने लगी है। बहुत सारे संदेशों में ' हैपी इंडिपेंडेंस डे' लिखा हुआ होता है। 'स्वतंत्रता दिवस' के मुकाबिल यह बड़ा कठिन सा शब्द है लेकिन इसके बिना पता ही नहीं पड़ता कि हम पढ़े लिखे हैं।

15 अगस्त 1947 से हम स्वतंत्र कहलाने लगे। आजादी सबके लिए आई। लेकिन कुछ लोग बहुत ज्यादा आजाद हैं। जिन लोगों को विरासत में 'पर' मिल जाते हैं वे स्वतंत्रता की 'पराकाष्ठा' पार कर देते हैं। भारत के युवा बड़ी संख्या में स्वतंत्रता से स्वछंदता की ओर बढ़ रहे हैं। कई बार यह प्रगति, दुर्गति जैसी लगती है। यौम ए आज़ादी के जलसे हर गली मोहल्ले में दिखाई देते हैं। यहां बहुत सारे झंडू नेता झंडा फहराने को आतुर रहते हैं। उनके पास भाषण का पुराना स्टॉक तैयार रहता है जिसे वे गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस पर एक शब्द बदलकर बरसों तक पढ़ते रहते हैं। जिस किसी के भाषण में किसान, जवान, अर्थ व्यवस्था, पाकिस्तान ज्यादा से ज्यादा होते हैं, वही ज्यादा अच्छा नेता माना जाता है। स्वतंत्रता दिवस की सबसे ज्यादा रौनक शालाओं में होती है। गुरुजी हर साल यह गर्व से बताते हैं कि भारत विश्व गुरु है। वे इस हकीकत तक नहीं जाते कि बहुत सारे देश खुद को महागुरु समझते हैं। सही बात तो यह है कि हर कोई गुरु एक दिन गुड़ रह जाता है, चेले शक्कर बन जाते हैं। आज भी कार्यक्रम खत्म होने के बाद सारे शिक्षक जब बड़े अध्यापक के कक्ष में बैठकर चाय पर चर्चा जरूर करेंगे कि वे 30-35 साल से प्राथमिक शिक्षक ही हैं। जबकि उनके कई चेले साहब बन गए हैं।

आज के भाषण में भारत की अर्थव्यवस्था के ट्रिलियनों में पहुंचने की बात जरूर होगी। लेकिन जलसे के बाद बच्चों को 50 ग्राम बूंदी देकर विदा किया जाएगा। स्वतंत्रता दिवस के लिए आवंटित बजट, आजादी के बाद से बूंदी बराबर ही रहता आया है। ट्रिलियन में कितने शून्य होते हैं, यह तो पता नहीं लेकिन शून्य की जगह बच्चों को मिलने वाली बूंदी लाइन से जमाई जाए तो शायद मुकाबला बराबरी का हो सकता है। ट्रिलियन होना बस 'एक' अंक की कमी से बच जाएगा।आज के दिन राष्ट्रगान गाना सबके लिए जरूरी होता है। मन में भावना होती है कि आज भी नहीं गाया तो कब गाएंगे। इसलिए राष्ट्रगान गाने की कोशिश सभी करते हैं। जिनको आता है वो इसे खुलकर गाता है। कुछ लोग पहली और आखिरी पंक्तियां जोश में गाते हैं और बीच में सिर्फ ओंठ चला लेते हैं। पर वे उसकी पूर्ति भारत माता की जय का नारा जोरदार आवाज में लगाकर अपनी राष्ट्रभक्ति सिद्ध कर देते हैं। राष्ट्रभक्ति सिद्ध करने का सबसे बड़ा दिन होता ही है यह। इसलिए जिन लोगों और संस्थाओं की राष्ट्रीयता पर सवाल उठने का खतरा मंडराता रहता है ऐसी अतिक्रमण करके बनी बस्तियां, धार्मिक, शैक्षणिक संस्थाएं और स्वयंसेवी संस्थाएं, अवैध मायाजाल फैलाकर भाग जाने को तैयार बैठी कम्पनियों में स्वतंत्रता दिवस ज्यादा ही जोर-शोर से मनाया जाता है। आज के भाषण में किसानों के साथ सेना के जवानों की चर्चा जरूर होती है। सेना के प्रति किसी भी भारतीय के मन में सम्मान हिलोरे लेता है। सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए भाषण दिया जाना अच्छा है। लेकिन आज बजाए जाने वाले गानों में शहीद होने, कुर्बान होने, दम निकले, जान जाए, खून बहाए...जैसे गानों की भरमार होने से किसी का मनोबल कैसे बढ़ सकता है। टूटता ही होगा। फिर भी खड़कते बरतन, बहकती धड़कन, पटकते पांव, भटकते गॉव, भिंची मुट्ठियां, उलझती गिट्टियां, बरसती ऑखें, चीखें-कांखें, जुबानी जंगें, भूखे नंगे माहौल के बावजूद आम आदमी का फक्कड़पन, निश्छल बचपन, बेफिक्र लड़कपन, आपसी संवेदन, खेतों की लहकन, किसानों की लगन, हर सुबह नई उमंग... होड़ करती अट्टालिकाएं, लहराती राष्ट्र पताकाएं, तूफानी गतिशीलता, अनूठी विनयशीलता, आस्मान को झुकाने की ताकत और बदलता हुआ वक्त हमें भारतीय होने के लिए गौरवान्वित करता है। स्वतंत्र चिंतन, स्वतंत्र मन, स्वतंत्र जीवन के पोषक मेरे देश के स्वतंत्रता दिवस को हृदय से नमन।

बोल के लब आजाद हैं तेरे

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

संध्या राजपुरोहित

लेखक 20 वर्षों से शिक्षा एवं विकास के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

आज हम 21वीं सदी में हैं, विज्ञान, तकनीक और अंतरिक्ष तक पहुँच चुके हैं। हमारे देश की महिलाएँ आज मंत्रालय से लेकर मिसाइल डिज़ाइन में जुटी हैं और अंतर्राष्ट्रीय खेलों में पदक जीत रही हैं। भारत की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, 'मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया' कही जाने वाली वैज्ञानिक डॉ. टेसी थॉमस, खेल की दुनिया में चमकती मिताली राज, पीवी सिंधु,दिव्या देशमुख और मैरी कॉम जैसी महिलाएं इस बात की मिसाल हैं कि जब स्त्री को अवसर दिया जाता है, तो वह केवल स्वयं नहीं, पूरे राष्ट्र को नई दिशा दे सकती है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की वीर नारियों ने विभिन्न रूपों में अपना अमूल्य योगदान दिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने स्वतंत्रता की रक्षा के लिए वीरता से तलवार उठाई, सावित्रीबाई फुले ने लड़कियों की शिक्षा की मशाल जलाकर समाज में जागृति फैलायी। इनके साथ ही बिगम हजरत महल ने 1857 के संग्राम में अंग्रेज़ी सत्ता को चुनौती दी, कस्तूरबा गांधी ने सत्याग्रह और महिला जागरण में अग्रणी भूमिका निभाई, एनी बेसेंट ने होमरूल आंदोलन से स्वतंत्रता की अलख जगाई, सरोजिनी नायडू ने 'भारत कोकिला' बनकर जन-जन में उत्साह भरा, और मातंगिनी हाज़रा, दुर्गावती देवी, कल्पना दत्त, अरुणा आसफ़ अली जैसी अनेक नारियों ने साहस, त्याग और संघर्ष से इतिहास रचा।

आज हम 21वीं सदी में हैं, विज्ञान, तकनीक और अंतरिक्ष तक पहुँच चुके हैं। हमारे देश की महिलाएँ आज मंत्रालय से लेकर मिसाइल डिज़ाइन में जुटी हैं और अंतर्राष्ट्रीय खेलों में पदक जीत रही हैं। भारत की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, 'मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया' कही जाने वाली वैज्ञानिक डॉ. टेसी थॉमस, खेल की दुनिया में चमकती मिताली राज, पीवी सिंधु,दिव्या देशमुख और मैरी कॉम जैसी महिलाएं इस बात की मिसाल हैं कि जब स्त्री को अवसर दिया जाता है, तो वह केवल स्वयं नहीं, पूरे राष्ट्र को नई दिशा दे सकती है।

आजादी के 78 वर्षों के बाद भी वर्तमान भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति विरोधाभासों से भरी है। एक ओर महिलाओं को घरेलू हिंसा, यौन शोषण, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक नियंत्रण का शिकार होना पड़ रहा है। ऐसे में हम राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2020-21) को देखे तो पाएंगे कि वर्ष 15-49 आयु वर्ग की महिलाओं में 33 प्रतिशत ने घरेलू हिंसा का अनुभव किया है। केवल 42 प्रतिशत महिलाओं को अपने स्वास्थ्य से संबंधित निर्णय लेने की स्वतंत्रता है। लगभग 63 प्रतिशत महिलाएं ही बैंक खातों का स्वतंत्र उपयोग कर पाती हैं। आर्थिक स्वतंत्रता की बात करें तो अधिकतर महिलाएं अपने खातों का प्रयोग भी पति या घर के किसी पुरुष सदस्य की अनुमति से करती हैं। यह आंकड़े उस सामाजिक असमानता का दर्पण हैं। ये आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि आधी आबादी को आज़ादी मिलने की कल्पना अभी अधूरी है।

समाज की बुनियादी इकाई 'परिवार' में भी ग्रामीण हो या शहरी महिलाओं की आवाज़ कमजोर है। बेटी से उसकी शिक्षा या करियर का चुनाव पूछे बिना कर लिया जाता है। बहू को 'घर की इज्ज़त' के नाम पर मौन धारण करने की शिक्षा दी जाती है, और मां को त्याग और समर्पण की मूर्ति मानकर उसकी ज़रूरतों को नज़रअंदाज़ किया जाता है। निर्णयों में महिलाएं अब भी हाशिए पर हैं, चाहे वह घर का वित्तीय प्रबंधन हो, बच्चों की पढ़ाई से जुड़ा फैसला, या खुद की चिकित्सा से जुड़ा निर्णय।

भारत के अधिकांश गाँवों में महिला सरपंच केवल नाम मात्र की होती हैं। निर्णय अक्सर उनके पति या पुरुष परिजन लेते हैं। पंचायत की बैठकों में वे उपस्थित तो रहती हैं, लेकिन पर्दे या घूंघट के पीछे। उन्हें यह तक नहीं बताया जाता कि किन मुद्दों पर चर्चा हो रही है। कि वहाँ क्या निर्णय लिए गए। उन्हें पता ही नहीं होता सशक्तिकरण के इस खोखले ढाँचे में उनकी आवाज़ कहीं दब जाती है। यह चुप्पी पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती है – संस्कारों के नाम पर, मर्यादा के नाम पर और परिवार की इज्ज़त के नाम पर। यही चुप्पी धीरे-धीरे एक सामाजिक रीत बन जाती है – जिसमें स्त्री के बोलने को विद्रोह माना जाता है और चुप्पी को 'सहनशीलता'।

रेड लाइट इलाकों में रहने वाली महिलाओं की स्थिति तो और भी भयावह है। आंकड़ों के अनुसार, भारत में लगभग आठ लाख महिलाएं वेश्यावृत्ति में संलग्न हैं। इनमें से अधिकांश महिलाएं बाल विवाह, गरीबी, घरेलू हिंसा या मानव तस्करी के चलते इस दलदल में फंसी हैं। इनका जीवन एक ऐसी चुप्पी में बीतता है, जिसे समाज ने 'चरित्रहीनता' के लिबास में छुपा दिया है।

NACO के डाटा को देखे तो अधिकांश महिलाएं गरीबी, बाल विवाह, घरेलू हिंसा, मानव तस्करी या छलावे का शिकार होकर इस दलदल में फंसी हैं। 2019 में मानव तस्करी से जुड़े मामलों में 90 प्रतिशत से अधिक पीड़ित महिलाएँ और किशोरियाँ थीं। रेड लाइट एरिया की अधिकतर लड़कियाँ स्कूल नहीं जा पातीं। एक अध्ययन के अनुसार, केवल 10 प्रतिशत बच्चियाँ ही हाई स्कूल तक की पढ़ाई पूरी कर पाती हैं। क्या ये महिलाएं अपनी मर्ज़ी से यहाँ आई हैं? वे शोषण की मारी हुई, मानव गरिमा से वंचित स्त्रियाँ हैं, इनकी स्थिति उन तमाम कानूनों और नीतियों पर प्रश्नचिन्ह लगाती है जो महिला कल्याण के नाम पर बने हैं लेकिन प्रभाव ज़मीनी स्तर पर नहीं दिखता। शहरों की महिलाएं भी पूरी तरह आज़ाद नहीं हैं। एक ओर तो वे बहुराष्ट्रीय कंपनियों में उच्च पदों पर हैं, लेकिन दूसरी ओर कार्यस्थल पर उत्पीड़न, कम वेतन और अवसरों में भेदभाव का सामना कर रही हैं। कई बार उनकी प्रगति को चरित्र से जोड़कर देखा जाता है।

वहीं आदिवासी महिलाओं की, जिनकी उपेक्षा दोहरी है, वे महिला भी हैं और आदिवासी भी। ये महिलाएं जंगल, खेती और जल से जुड़ी हैं। वे अपने समाज की रीढ़ हैं, पर उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और अधिकारों की स्थिति चिंताजनक है। भारत की कुल आबादी का लगभग 8.6 प्रतिशत हिस्सा आदिवासी समुदायों का है, जिसमें आधे से अधिक महिलाएं हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, आदिवासी महिलाओं की साक्षरता दर केवल 49.35 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय महिला औसत 70.3 प्रतिशत से काफी कम है। NFHS-5 के अनुसार, आदिवासी बहुल क्षेत्रों में हर चार में से एक लड़की की शादी 18 वर्ष से पहले हो जाती है। बाल विवाह, कुपोषण, स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता और सामाजिक निर्णयों में सहभागिता की कमी – ये सभी उनके जीवन को कठिन बना देते हैं।

जब आदिवासी महिलाएं अपने अधिकारों की बात करती हैं, तो उन्हें उग्रवादी, पिछड़ी या विद्रोही समझा जाता है। उन्हें स्थानीय फैसलों में केवल सांस्कृतिक प्रतीक बना दिया जाता है, वास्तविक भागीदारी से दूर रखा जाता है। जब तक हम आदिवासी अंचलों की बेटियों को पढ़ने, बोलने और नेतृत्व करने का अवसर नहीं देंगे, तब तक समावेशी सशक्तिकरण अधूरा रहेगा।

आज जरूरत है एक ऐसी सोच की, जो नारी की चुप्पी को नहीं, उसकी आवाज़ को महत्व दे। एक ऐसी व्यवस्था की, जो कानून और नीतियों को कागज़ से ज़मीन पर लाए। एक ऐसा वातावरण, जहाँ लड़की को बोलने से पहले सौ बार न सोचना पड़े, जहाँ रेड लाइट इलाके की महिला को भी पुनर्वास की संभावना दिखे, और जहाँ आदिवासी अंचल की बेटी को भी यह महसूस हो कि उसका भी एक नाम, एक पहचान, और एक हक़ है। जब कोई स्त्री बोलती है, वह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि उन तमाम स्त्रियों की ओर से बोलती है जो अब भी चुप हैं। वह अपनी चुप्पी ही नहीं, पीढ़ियों की चुप्पी तोड़ती है। जब कोई बेटी दहेज के खिलाफ खड़ी होती है, जब कोई बहू घरेलू हिंसा के विरुद्ध बोलती है, जब कोई आदिवासी महिला वनाधिकार की मांग करती है – तो यह केवल विरोध नहीं, यह सामाजिक चेतना की नई शुरुआत है।

लेकिन बोलना भी साहस मांगता है – और यह साहस तब आता है जब वातावरण सहयोगी हो, जब परिवारों में बेटियों को प्रश्न पूछने की आज़ादी दी जाए, स्कूलों में नेतृत्व की भूमिका सौंपी जाए, पंचायतों में उनकी भागीदारी को औपचारिकता नहीं बल्कि अधिकार माना जाए। जब हर स्त्री– चाहे वह शहर की हो या गाँव की, पढ़ी-लिखी हो या अशिक्षित, वंचित हो या अवसर प्राप्त– बिना डर, संकोच या तिरस्कार के अपनी बात कह सकेगी, तब ही भारत वास्तव में सशक्त कहलाएगा। तब यह पंक्ति केवल कविता नहीं, एक सामाजिक क्रांति का उद्घोष बन जाएगी - 'बोल के लब आज़ाद हैं तेरे...'

कविताएँ

नलिन खोईवाल

देश हमारा

देश हमें प्राणों से प्यारा,
अर्पित इस पर जीवन सारा।
फैले इसकी गौरव गाथा,
संगति,उन्नति,सन्मति विधाता।
गर्व से तिरंगा लहराता,
देश प्रेम की अलख जगाता।
गंगा-जमनी बहती धारा,
मँझधार में मिलता किनारा।
गाते इसका हम सुयश गान,
जग में बढ़ता हैं हमारा मान।
नभ का सूरज,चांद,सितारा,
इससे ऊँचा शीश हमारा।
सागर इसके चरण पखारे,
नतमस्तक है पर्वत सारे।
खूबसूरत इसके नज़ारें,
पग-पग महकती हैं बहारें।
भारत के वीर सिपाही
भारत के हम वीर सिपाही,
आगे और बढ़ते चलेंगे,
जो भी आए पथ में मुश्किल-
हम ना कभी पीछे हटेंगे।
भारत के हम रखवाले हैं,
दुश्मन के आगे न झुकेंगे,
खाते कसम है हम वतन की-
जान अपनी लगा हम देंगे।
आन हमारी शान तिरंगा,
गौरव गाथा इसकी गाएं,
जय-जयकार करें हम इसकी-
गर्व से तिरंगा फहराएं।
निर्मल,अविरल बहती नदिया,
यह हमारा प्यारा वतन है,
इस जैसा ना कोई जग में-
यह मेरा अनमोल रतन है।

गौरव-गान है तिरंगा

– रामेश्वरम तिवारी

देश की शान है तिरंगा, देश की आन है तिरंगा,
देश का गौरव-गान है, मान-सम्मान है तिरंगा।

जिसको लेकर शहीदों ने जान क़ुरबान कर दी,
स्वाधीनता का परचम औ' संविधान है तिरंगा।

शांति, शौर्य, प्रगति का प्रतीक, संदेश-वाहक,
एकता, सौहार्द्रता, प्रेम का प्रतिमान है तिरंगा।

सरहद, संसद, घर की ऊँची भित्ति पर फहराएँ,
फ़ौज की हिम्मत, हौसलों की उड़ान है तिरंगा।

बलिदानियों को नमन करें, वतन को चमन करें,
हर्षित हों गीत गाएँ भोर का नव-गान है तिरंगा।

श्री अरविंद और भारत-चिंतन

जन्मदिवस विशेष

मुरलीधर चाँदनीवाला

श्री अरविंद भारतीय मेधा के महान् ऋषि हैं। वे सच्चे अर्थों में भारत की आत्मा को बहुत पास से देख लेने वाले दार्शनिक भी हैं। अतिमानस को लेकर उनकी जो महान् उपलब्धियाँ हैं, उनका आधार भारत के प्राचीन ऋषियों की स्थापनाएँ ही हैं। श्री अरविन्द की वाणी में भारत बोलता है। यदि हम बहुत ध्यान लगाकर सुन सकें, तो पायेंगे कि श्री अरविन्द एक पल के लिये भी भारत को अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देते। भारत की चेतना को समग्र में समेटने की असाधारण शक्ति श्री अरविन्द के पास है। प्राचीन भारतीय साहित्य और इतिहास में से क्या लेना है और क्या छोड़ देना है, इसका स्पष्ट गणित श्री अरविन्द के पास है। हमारा ध्यान बार-बार इस बात पर जाता है कि वेदों की विस्तृत विस्तृत चर्चा करते हुए भी श्री अरविन्द ऋग्वेद का उल्लेख करते हुए थकते नहीं, किन्तु यजुर्वेद का कहीं नाम नहीं लेते, अथर्ववेद और सामवेद का भी सांकेतिक उल्लेख करते हैं। वे यह बताना चाहते हैं कि भारत का मूल स्वरूप समझने की दृष्टि ऋग्वेद ही देता है। विश्व की मानव सभ्यता का आरम्भ देखना हो, सृष्टि का विकास देखना हो, तो श्री अरविन्द भारतीय चिंतन का जो दस्तावेज विश्व के पटल पर रखते हैं, वह एक मात्र ऋग्वेद है।

श्री अरविन्द ब्राह्मण ग्रंथों का, आरण्यकों का उल्लेख नहीं करते, लेकिन उपनिषदों के उल्लेख के बिना श्री अरविन्द की यात्रा ही आरम्भ नहीं होती, श्री अरविंद उपनिषदों को भारतीय चिंतन के उच्चतम शिखर के रूप में देखते हैं। हमें इस तरह देखना होगा, कि 'लाइफ डिवाइन' उपनिषदों का ही आधुनिकतम स्वरूप है। लाइफ डिवाइन भारत-चिंतन का महाकोश है। आधुनिक विश्व साहित्य में इसकी जोड़ का दूसरा कोई ग्रंथ नहीं। यह मानव-मस्तिष्क की श्रेष्ठतम उपज है। भले ही इसे अभी उन्नत चेतना वाले बहुत थोड़े से विशेषज्ञ समझ पा रहे हों, किन्तु जिस तरह से मनुष्य की ग्रहणशीलता तीव्रता से विकसित हो रही है, उसे देखकर आश्वस्त हुआ जा सकता है एक दिन लाइफ डिवाइन ही भारत चिंतन का आधुनिक स्मारक घोषित होगा। श्री अरविन्द ईशावास्योपनिषद् और दूसरे कई उपनिषदों की व्याख्या करते हुए इस बात को रेखांकित करते चलते हैं कि उपनिषद् भारत-चिंतन का स्वच्छ दर्पण है।

श्री अरविंद वेदांग की बहुत चर्चा नहीं करते, वेद-विमर्श के लिये निरुक्त और ज्योतिष को जरूरत से ज्यादा महत्व देने के पक्ष में नहीं होते। वे वैदिक कर्मकांड से तो हमें बिल्कुल ही बाहर खींच निकालने का जतन करते हैं। श्री अरविन्द का भारत-चिंतन मौलिक है, और वह भविष्य के लिये है। भारत-चिंतन की गहराई में उतरने के लिये पुराणों का अध्ययन वे प्रस्तावित नहीं करते, लेकिन विष्णुपुराण के भाव-सौन्दर्य और लालित्य को भारतीय हृदय की सुंदर अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं। श्री अरविन्द वाल्मीकि को 'भारत का मन' कहते हैं। वाल्मीकि रामायण में उन्हें भारत का उदार चरित्र

दिखाई देता है। 'महाभारत' तो है ही भारत की सम्पूर्ण राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना का महाकाव्य। महाभारत के विषय मे ठीक ही कहा गया है-'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित।' श्री अरविन्द ने बहुत सावधानीपूर्वक महाभारत में से 'सावित्री उपाख्यान' को उठाया, और उसे विश्व के सबसे बड़े महाकाव्य के स्वरूप में बदल दिया। सावित्री महाकाव्य के बीज भारत-चिंतन के स्वर्णिम बीज हैं। वह भविष्य बहुत समीप है, जब भारतीय मेधा के उज्ज्वल पक्ष को समझने के लिये समूचा विश्व 'सावित्री' की ओर देखेगा।

गीता श्री अरविन्द के मानस के बहुत पास का ग्रंथ है। चूँकि श्री अरविन्द का विराट व्यक्तित्व कृष्ण-चेतना का व्यक्तित्व है, इसलिए गीता का अमृत सहज ही श्री अरविन्द की वाणी में एक बार फिर निःसृत हुआ। विश्व को श्री अरविन्द का संदेश मूल रूप में गीता का ही संदेश है। गीता भगवान् का प्रसाद है। ऐसा प्रसाद, जो भारतवर्ष के व्यासपीठ से समूचे संसार को वितरित होता चला आया है। 'आत्मा की अमरता' भारत के मौलिक चिंतन की देन है। श्री अरविन्द का योग सबके लिये है। सम्पूर्ण जीवन को योग कहने वाले श्री अरविन्द ने भारतीय योग को नया अर्थ दिया, यज्ञ को नये ढंग से परिभाषित किया, 'भारत' और 'सनातन' को एक बताते हुए श्री अरविन्द ने भारत ही नहीं, पूरे विश्व के लिये ऐसे धर्म का प्रस्ताव रखा, जो मनुष्य को दिव्य जीवन की ओर मोड़ दे।

श्री अरविन्द भारत-चिंतन के प्रमुख पक्षधर थे। महाकवि कालिदास के साहित्य से उन्होंने प्रेरणा ली। उनके निष्कर्ष थे कि कालिदास का साहित्य भारत-चिंतन का साहित्य है। रघुवंश महाकाव्य केवल रघुकुल का इतिहास नहीं बताता, वह इक्ष्वाकुवंश के सम्राटों का जीवन भारतीयता के आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है। श्री अरविन्द 'भारतीय संस्कृति के आधार' में रघुवंश के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हैं। कालिदास का 'कुमारसम्भवम्' अस्ति का महाकाव्य है, आत्मविश्वास का महाकाव्य है। पहले ही श्लोक 'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः। पूर्वापरौ तोयनिधीव गाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।' में पर्वतराज हिमालय को पृथ्वी का मानदंड बता कर कालिदास ने भारत के गुरुत्व की ओर स्पष्ट संकेत किया है। कालिदास का 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' भी सामान्य प्रेमकथा नहीं है। वह भारतीय मनीषा का उच्चतम उदाहरण है। वह हमारे सामने भारतीय गुरुकुल का चरित्र सामने रखता है। शकुन्तला ऊपर से पृथ्वी पर उतरी हुई दिव्य शक्ति है, जो अंततः पार्थिव सत्ता को ऊपर तक उठा ले जाती है। भरत, जिसके नाम पर भारत नाम पड़ा, वह द्युलोक में कश्यप और अदिति के आश्रम में ही जन्म लेता है। श्री अरविन्द महाकवि कालिदास को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं, क्योंकि उनका साहित्य भारत-चिंतन के परिप्रेक्ष्य में है।

श्री अरविंद अपनी पुस्तक 'द फाउन्डेशन ऑव इंडियन कल्चर' में भारत-चिंतन की चर्चा विस्तार से करते हैं। वे बताते हैं कि उत्तर और दक्षिण के मंदिर, वहाँ स्थापित मूर्तियाँ, वहाँ की पूजा-पद्धति, पूरा का पूरा स्थापत्य, नदियों के घाट, शैव, शाक्त और वैष्णव सम्प्रदाय, आश्रम और गुरुकुल भारत-चिंतन की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है। हमारी संत परम्परा भी भारत-चिंतन की वह देन है, जिससे भक्ति आन्दोलन खड़े हुए और जिसने अनमोल भक्ति साहित्य दिया। श्री अरविन्द भारतीय शासन प्रणाली का भी उल्लेख करते हैं, जिसके कारण भारत-चिंतन की दिशा तय हुई, और सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक संस्थाओं को जीवन मिला। वे उस न्याय प्रणाली का भी पूजा भाव से स्मरण करते हैं, जिसने भारत का गौरव-संवर्धन किया। इन सबसे अलग श्री अरविन्द की एक बहुत छोटी सी, किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण संस्कृत कविता 'भवानी भारती' है, जो भारत-चिंतन का वह दिव्यांश है, जो स्वयं भारतमाताके मुख से बह निकला। 'माता' पुस्तक श्री अरविन्द की ऐसी मंत्र-रचना है,जो भारत की ओर से पृथ्वी पर मातृसत्ता के पुनराविर्भाव का विश्वास जगातीहै।

श्री अरविंद भारतीय चिंतन, भारतीय मन, भारतीय श्रद्धा और विश्वास केसमर्थ भाष्यकार हैं। वे भारत की नियति भली भाँति जानते हैं। वे हमारेलिये पुरातन में से खोद-खोदकर वह सोना निकाल लाते हैं, जो भारत केउज्ज्वल भविष्य का शृंगार करने में उपयोगी हो। वे भारत की ओर से सम्पूर्णविश्व को दीक्षा दे रहे हैं। श्री अरविन्द का सम्पूर्ण वाङ्मय प्राचीन भारतीय साहित्य से अनुप्राणित होकर भी भविष्य की पक्की नींव रखने मेंसमर्थ है। मनुस्मृति में लिखा हुआ एक श्लोक श्री अरविन्द जैसे बहुत हीथोड़े से ऋषियों की ओर ही इंगित करते हुए कहता है-एतद्देश प्रसूतस्यसकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

जब मिठाईयां बनीं क्रांतिकारियों के गुप्त संदेशों की संवाहक

स्वतंत्रता दिवस

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

मिठाई मन मोहती हैं, मुंह में स्वाद घोलती हैं। चाहे बच्चे-बूढ़े हों या तरुण किशोर, प्रौढ़ स्त्री-पुरुष हों या नवजवान। नौकरीपेशा अधिकारी-कर्मचारी हों या कामगार मजदूर किसान। शहरी नागरिक हों या वनवासी एवं गिरिवासी। मिठाई सभी को पसंद है और मिठाई देखते ही मुंह में पानी आने लगता है और जीभ पर विशेष स्वाद उतर आता है। मिठाई के सभी दीवाने हैं। मिठाई के बिना कोई तीज-त्योहार, धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ-कर्मकाण्ड, विवाह-निकाह सम्पन्न नहीं होता। जन्मदिन की पार्टी में केक के अलावा कोई और मिठाई न हो तो पार्टी फीकी हो जाती है। कार्यालयों में स्थानांतरण या सेवानिवृत्ति का विदाई समारोह हो तो मिठाई की प्लेटों की शोभा देखते ही बनती है। भगवान के भोग राग में भी मिठाई की थाली आवश्यक है। और तो और, श्मशान में मृतक की अंत्येष्टि में भी सात प्रकार की मिठाई का डिब्बा रखने की परम्परा विद्यमान है। कुल मिलाकर मिठाई समाज जीवन के दैनंदिन और विशेष आयोजनों का विशेष एवं अनिवार्य हिस्सा है जिसकी रिक्तता की पूर्ति असंभव है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई में मिठाईयों ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

बनारस की तिरंगी बर्फी और कलकत्ता की जय हिंद संदेश बर्फी ने अंग्रेजी सत्ता की नींद उड़ा दी थी, तब उनके निर्माण एवं विक्रय पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। निस्संदेह स्वतंत्रता आंदोलन में मिठाई की दुकानों की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जिसे समझना आवश्यक है। लेख का शीर्षक देखकर पाठक चौंके होंगे कि क्या ऐसा सम्भव हुआ होगा, किंतु यह बात सोलह आने सच और खरी है कि अंग्रेजों से भारत वर्ष की आजादी की लड़ाई में क्रांतिकारियों एवं राजनीतिक नेताओ-सेनानियों की भांति हलवाइयों ने भी अपने अलग तरीके से अप्रत्यक्ष ढंग से महत्वपूर्ण योगदान दिया था। भले ही वह प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों से लोहा नहीं ले सके किंतु अपनी मिठाइयों के माध्यम से गुप्त संदेशों को न केवल क्रांतिकारियों तक पहुंचाया बल्कि क्रांतिकारियों को अपनी दुकानों में आश्रय भी दिया। किंतु दुर्भाग्यवश देश की आजादी की लड़ाई में मिठाई की दुकानों का योगदान अचर्चित एवं अलिखित रह अवश्य गया है पर बनारस, दिल्ली और कोलकाता की गलियों में उनके योगदान के मीठे किस्से आज भी हवा में तैर रहे हैं।

अगस्त 1942, महात्मा गांधी जी ने अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन आरंभ किया। बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गये। अंग्रेजी हुकूमत ने देशभर में तिरंगा फहराने-लहराने तथा तिरंगा ध्वज साथ लेकर चलने-फिरने पर प्रतिबंध लगा दिया। साथ ही सार्वजनिक समारोहों के आयोजन करने पर भी रोक लगा दी गई। ऐसे अवसर पर सामान्य जन में देशप्रेम की भावना उत्पन्न करने और अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन की धार को तीव्रतर बनाये रखने के लिए बनारस के देशभक्त हलवाई रघुनाथ प्रसाद ने एक तीन परतों की बर्फी बनाई, जिसे नाम दिया गया तिरंगी बर्फी। यह विशेष प्रकार की बर्फी काजू , बादाम और पिस्ता से तैयार की जाती थी तथा स्वतंत्रता सेनानियों एवं आमजन को भी मुफ्त भी खिलाई जाती थी ताकि उनके मन-मस्तिष्क में देशभक्ति का रंग और जिह्वा पर स्वाद चढ़ा रहे। इसके साथ ही जवाहर लड्डू, गांधी गौरव, सुभाष भोग, मोती पाक और वल्लभ संदेश नाम से विविध मिठाइयां बनाई जाती थीं।आज भी यह तिरंगी बर्फी बनारस के ठठेरी बाजार की उस दुकान में बनाई जा रही है हालांकि अब काजू ,बादाम एवं पिस्ता की जगह यह दूध और खोया से तैयार की जा रही है, लेकिन अपनी परंपरा का निर्वाह करते हुए यह तिरंगी बर्फी आज भी लोगों की पहली पसंद बनी हुई है, आमतौर से स्वाधीनता दिवस तथा गणतंत्र दिवस में बहुत मांग रहती है। इसी प्रकार कोलकाता में मन्मथ दास नाम के हलवाई ने जयहिंद संदेश नाम की तीन रंगों की बर्फी तैयार की। ऊपर नारंगी रंग, बीच में मलाईदार खोवा की परत और नीचे पिस्ता से बनी हरी परत रहती थी। आपको जानकर यह आश्चर्य होगा कि तिरंगी बर्फी और जयहिंद संदेश की अत्यंत लोकप्रियता और इनसे आमजन में देशभक्ति की भावना का ज्वार उठ जाने से अंग्रेजी हुकूमत की नींद उड़ गई और अंग्रेजों ने जयहिंद संदेश तथा तिरंगी बर्फी निर्मित करने और विक्रय पर प्रतिबंध लगा दिया। बावजूद इसके यह बर्फी चोरी-छिपे बनाकर आम जनता तक पहुंचाई जाती रही।अब मैं आपको दिल्ली की उन मिठाई की दुकानों की ओर लिए चलता हूं जहां भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद प्रभृति क्रांतिकारी न केवल गुप्त वार्ताएं करते थे बल्कि मिठाई के डिब्बों के आदान-प्रदान से एक-दूसरे तक गुप्त सूचनाएं भी पहुंचाते थे। जब अंग्रेजी सत्ता के गुप्तचर क्रांतिकारियों की टोह लेने के लिए चतुर्दिक सक्रिय रहते थे और क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम तक पहुंचने से पहले रोकने के लिए अंग्रेजी सत्ता कटिबद्ध थी तब क्रांतिकारियों ने मिठाइयां को कोड देकर महत्वपूर्ण संदेश गोपनीय ढंग से गुप्तचरों की आंखों में धूल झोंकते हुए संबंधित क्रांतिकारी तक न केवल पहुंचाते थे बल्कि क्रांतिकारी गतिविधियां भी संपन्न करते थे। जैसे यदि मिठाई के डिब्बे में लड्डू है तो इसका आशय था कि अड्डे पर बम उतर रहे हैं?, बंगाली छेना रसगुल्ला का अर्थ होता था कि विस्फोटकों की एक बड़ी खेप रास्ते पर है। इसी तरह यदि डिब्बे में बर्फी है तो पाने वाला क्रांतिकारी समझ जाता था कि कारतूस, गोला और बारूद उपलब्ध हो गया है। इन मिठाई की दुकानों की ओर अंग्रेजों का कभी ध्यान नहीं गया और न कभी छापा डाला गया। इसलिए क्रांतिकारी अंग्रेजों की नजरें बचा कर यहां बैठकर न केवल अपनी गुप्त वार्ताएं संपन्न करते थे बल्कि संकट और धरपकड़ के समय कुछ दिनों का आश्रय भी पाते थे।भारत की आजादी के संघर्ष इतिहास का यह एक ऐसा अध्याय है जिसके पृष्ठ कोरे हैं। आवश्यकता है कि इस पर सरकार द्वारा शोध करवाकर स्वातंत्र्य समर में मिठाई की दुकानों के योगदान को अंकित किया जाये ताकि आगामी पीढ़ी परिचित हो प्रेरणा ग्रहण कर सके।

नकारात्मक मानसिक गुलामी और आत्म छल की परतें

आजादी विशेष

डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी

वरिष्ठ मनोचिकित्सक और पुस्तक 'ओवरथिंकिंग से आजादी' के लेखक

हमारे जीवन में स्वतंत्रता केवल बाहरी बंधनों से मुक्ति का नाम नहीं है बल्कि यह हमारे विचारों भावनाओं और दृष्टिकोण में भी प्रतिबिंबित होती है। एक मनोचिकित्सक के रूप में मैं अक्सर देखता हूँ कि लोग अपने भीतर नकारात्मक भावनाओं जैसे ईर्ष्या द्वेष लोभ आलोचना चापलूसी और दिखावे के अदृश्य बंधनों में जकड़े रहते हैं। ये बंधन लोहे की जंजीरों जैसे स्पष्ट नहीं होते बल्कि यह मन के भीतर धीरे धीरे पनपते हैं और व्यक्ति को यह विश्वास दिला देते हैं कि वह स्वतंत्र है जबकि असल में वह मानसिक गुलामी का शिकार होता है।

ईर्ष्या व्यक्ति को हमेशा तुलना के दलदल में धकेलती है द्वेष रिश्तों को तोड़ता है लोभ संतोष छीन लेता है और चापलूसी आत्म सम्मान को खोखला कर देती है। आलोचना अगर रचनात्मक न हो तो यह व्यक्ति को कड़वाहट और नकारात्मकता से भर देती है। दिखावा जिसे आज सोशल मीडिया ने और बढ़ावा दिया है व्यक्ति को वास्तविकता से दूर ले जाकर आत्म छल में डाल देता है। यह आत्म छल एक तरह का डिनायल है अर्थात् सच्चाई को स्वीकारने से इंकार करना।

आज के समय में लोग इन नकारात्मक विचारों के गुलाम होते हुए भी बाहर से खुश और आजाद दिखने का अभिनय करते हैं। जैसे स्वतंत्रता दिवस पर रंग बिरंगे कपड़े पहनकर मिठाई के साथ तस्वीर खिंचवाकर सोशल मीडिया पर डालना आसान है लेकिन भीतर के मानसिक बंधनों को तोड़ना कठिन। असली आज़ादी इन बंधनों से मुक्ति में है न कि केवल उत्सव के प्रतीकों में।

मनोचिकित्सक दृष्टि से यह प्रवृत्ति आत्म जागरूकता की कमी से आती है। जब हम यह नहीं पहचान पाते कि हमारे विचार और व्यवहार नकारात्मक भावनाओं से प्रेरित हैं तब हम बाहरी दिखावे में संतोष ढूँढने लगते हैं। यह एक तरह का मनोवैज्ञानिक डिफेंस मैकेनिज्म है जिसमें हम अपनी असल समस्या को देखने के बजाय सतही और तात्कालिक संतुष्टि में खो जाते हैं। स्वतंत्रता की असली परीक्षा यह है कि क्या हम अपनी ईर्ष्या को त्याग सकते हैं द्वेष को क्षमा से बदल सकते हैं लोभ को संतोष से और दिखावे को वास्तविकता से। जब हम चापलूसी के बजाय सच्ची सराहना और आलोचना के बजाय रचनात्मक संवाद को अपनाते हैं तभी हम मानसिक गुलामी से मुक्त हो पाते हैं।इसलिए अगली बार जब हम स्वतंत्रता का जश्न मनाएँ तो बाहरी प्रतीकों के साथ साथ अपने भीतर झाँकने का साहस भी करें। असली सेल्फी वह होगी जिसमें हमारा चेहरा ही नहीं बल्कि हमारा मन भी साफ और स्वतंत्र दिखाई दे। यही मानसिक स्वतंत्रता का उत्सव है।

देश की धड़कन तिरंगा

लाल बहादुर श्रीवास्तव

पंख मिले आजादी के
शहीदों की शहादत से
फर्ज हमारा बंधु प्यारे
देश को रखें हम सब
मिलकर बड़ी हिफाजत से।
गगन से ऊंची भरी उड़ानें
सारा विश्व चकित हमारी
शिखर कामयाबी देख के
विश्व पताका लहराई
विकसित भारत की विश्व में।

न झुकें है न झुकेंगे
न डरें है न डरेंगे
गीदड़ भभकियों से कभी
सुन ले कान खोलकर
पाक उनके आका भी
आजाद भगतसिंह शेर सी
सिंह गर्जना मेरे देश की।

आजादी का तिरंगा गगन में
जब लहर लहर लहराता है
मेरा प्यारा देश हंसता
मुस्कुराता खिलखिलाता
गीत आजादी के गुनगुनाता है।
देश सर्वोपरि ,स्वयं हित से पहले?
तिरंगा यशगाथा जुबानी कहता है
देश के जीवन की धड़कन
सांस सांस बस प्यारा तिरंगा है।

78वां या 79वां इस साल होगा कौन सा स्वतंत्रता दिवस

आजादी के 78 साल पूरे होने पर आज भी कई लोगों को इस बात का कंफ्यूजन है कि हम इस साल 78वां या 79वां कौन सा स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं. आइए इस स्वतंत्रता दिवस के मौके पर हम इसी कंफ्यूजन को दूर करते हैं.

15 अगस्त 1947 को हमने ब्रिटिश सरकार के 200 सालों के राज के बाद आजादी हासिल की थी. हमारे देश के नायकों के त्याग, तपस्या और बलिदान का नतीजा था की हमने अपनी शर्तों पर अपने देश में रहने लगे. इसी दिन को याद कर हर साल पूरे देश में हर्ष उल्लास रहता है. इसके लिए तैयारियों पहले से होने लगती है. पिछले साल ही हमने आजादी का अमृत महोत्सव मनाया अब अपने 100 साल से सफर के लिए आगे बढ़ गए हैं. लेकिन, आजादी के इतने सालों बाद कई लोगों ने इस बात का कंफ्यूजन रहता है कि इस साल 78वां या 79वां कौन सा स्वतंत्रता दिवस मनाया जा रहा है.

15 अगस्त 1947 की आधी रात को भारत को अंग्रेजों से आजादी मिली. हमें ब्रिटिश राज से आजाद होने में 200 साल से अधिक का समय लगा. इस दौरान हमारे नायक अलग-अलग तरीकों और समय पर लड़ते रहे. इसकी का परिणाम था कि 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ और पहले प्रधानमंत्री के रूप में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने लाल किले पर हमारा प्यारा तिरंगा फहराया. इसके बाद से स्वतंत्रता दिवस पर हर साल दिल्ली के लाल किले पर राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराते की परंपरा चल पड़ी.

78वां या 79वां स्वतंत्रता दिवस

आजाद भारत का इस साल 79वां स्वतंत्रता दिवस होगा. आप अब भी कंफ्यूज हैं तो आइए समझते हैं इसके पीछे की गणित. चूंकि पहली बार 15 अगस्त सन 1947 को देश के आजाद होने पर झंडा फहराया गया था. तकनीकी रूप से ये दिन देश का पहला स्वतंत्रता दिवस था. इसके बाद 15 अगस्त 1948 को भारत का दूसरा स्वतंत्रता दिवस और आजादी की पहली वर्षगांठ थी. इस हिसाब से 15 अगस्त 2025 को आजादी की 78वीं वर्षगांठ और 79वां स्वतंत्रता दिवस होगा. यानी अब हम आजादी के 78 साल पूरे कर अपने 100 साल के सफर के लिए आगे बढ़ गए हैं.

खास होने वाला है स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता दिवस आजादी का त्यौहार हमारी स्वतंत्रता का प्रतीक है. यह दिन में एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में हासिल उपलब्धियों के जश्न मनाने का मौका है. इस साल भी समूचा भारत आजादी का जश्न मनाने के लिए तैयार है, सबकुछ न्यौछावर करने की सौगंध खाने को भी तत्पर हैं. इस साल हम आजादी के अमृत महोत्सव से एक साल आगे बढ़ गए हैं. इस बीच देश ने काफी कुछ हासिल किया है. इस कारण भारत का ये राष्ट्रीय त्यौहार और भी खास होने वाला है.

लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस की तैयारियां जोरों पर

देश की राजधानी दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस की तैयारियां जोरों पर हैं। स्वतंत्रता दिवस के मद्देनजर लाल किले की सुरक्षा व्यवस्था सख्त कर दी गई है। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले पर झंडारोहण के लिए विशेष मंच तैयार किया जा रहा है। इस मंच से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश को संबोधित करेंगे और राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे। तैयारियों के तहत लाल किले को सजाया जा रहा है और सुरक्षा व्यवस्था सख्त की गई है। स्वतंत्रता दिवस पर देशभर से लोग लाल किले पहुंचेंगे और झंडारोहण समारोह में भाग लेंगे।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारी

स्वतंत्रता दिवस को देखते हुए व्यापक तैयारियां की जा रही है। सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट पर हैं, लाल किले के आस-पास सुरक्षा घेरा मजबूत किया जा रहा है। इसके अलावा लाल किले को रोशनी से सजाया जा रहा है और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारी की जा रही है। देशभर से लोग स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले पहुंचेंगे। 15 अगस्त 1947 को भारत को ब्रिटिश हुकूमत से आजादी मिलने के बाद हर साल 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस ऐतिहासिक दिन को मनाने की तैयारियां शुरू हो गई हैं। इस दिन स्वतंत्रता सेनानियों को याद किया जाता है और आजादी का जश्न मनाया जाता है। स्वतंत्रता दिवस के दिन देशभर में झंडारोहण, परेड, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

भारत भाग्य विधाता!

स्वतंत्रता दिवस ऐसा दिन है जब हम अपने महान् राष्ट्रीय नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों को अपनी श्रद्धांजलि देते हैं जिन्होंने विदेशी नियंत्रण से भारत को आज़ाद कराने के लिए अनेक बलिदान दिए और अपने जीवन न्यौछावर कर दिए। 15 अगस्त 1947 को भारत के निवासियों ने लाखों कुर्बानियां देकर ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्रता प्राप्त की थी। यह राष्ट्रीय पर्व भारत के गौरव का प्रतीक है। प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को सरकारी बिल्डिंगों पर तिरंगा झण्डा फहराया जाता है तथा रौशनी की जाती है। प्रधानमंत्री प्रातः 7 बजे लाल क़िले पर झण्डा लहराते हैं और अपने देशवासियों को अपने देश की नीति पर भाषण देते हैं। हज़ारों लोग उनका भाषण सुनने के लिए लाल क़िले पर जाते हैं।

सन 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महायज्ञ का प्रारम्भ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रारम्भ किया और अपने प्राणों को भारत माता पर मंगल पांडे ने न्यौछावर किया और देखते ही देखते यह चिंगारी एक महासंग्राम में बदल गयी जिसमें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहेब, सरफ़रोशी की तमन्ना लिए रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक, चंद्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि देश के लिए शहीद हो गए। तिलक ने स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है का सिंहनाद किया और सुभाष चंद्र बोस ने कहा - तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।

अहिंसा और असहयोग लेकर महात्मा गाँधी और गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ने के लिए लौह पुरुष सरदार पटेल जैसे महापुरुषों ने कमर कस ली। 90 वर्षों के लम्बे संघर्ष के बाद 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता का वरदान मिला। भारत की आज़ादी का संग्राम बल से नहीं वरन् सत्य और अहिंसा के सिद्धांत के आधार पर विजित किया गया। इतिहास में स्वतंत्रता के संघर्ष का एक अनोखा और अनूठा अभियान था जिसे विश्व भर में प्रशंसा मिली।

स्वतंत्रता दिवस का इतिहास

मई 1857 में दिल्ली के कुछ समाचार पत्रों में यह भविष्यवाणी छपी कि प्लासी के युद्ध के पश्चात् 23 जून 1757 ई. को भारत में जो अंग्रेज़ी राज्य स्थापित हुआ था वह 23 जून 1857 ई. तक समाप्त हो जाएगा। यह भविष्यवाणी सारे देश में फैल गई और लोगों में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए जोश की लहर दौड़ गई। इसके अतिरिक्त 1856 ई. में लार्ड कैनिंग ने सामान्य भर्ती क़ानून पास किया। जिसके अनुसार भारतीय सैनिकों को यह लिखकर देना होता था कि सरकार जहाँ कहीं भी उन्हें युद्ध करने के लिए भेजेगी वह वहीं पर चले जाएँगे। इससे भारतीय सैनिकों में असाधारण असन्तोष फैल गया। कम्पनी की सेना में उस समय तीन लाख सैनिक थे, जिनमें से केवल पाँच हज़ार ही यूरोपियन थे। बाकी सब अर्थात् यूरोपियन सैनिकों से 6 गुना भारतीय सैनिक थे।

सिपाही क्रांति 1857

जब देश में चारों ओर असन्तोष का वातावरण था, तो अंग्रेज़ी सरकार ने सैनिकों को पुरानी बन्दूकों के स्थान पर नई राइफलें देने का निश्चय किया। इन राइफलों के कारतूस में सूअर तथा गाय की चर्बी प्रयुक्त की जाती थी और सैनिकों को राइफलों में गोली भरने के लिए इन कारतूसों के सिरे को अपने दाँतों से काटना पड़ता था। इससे हिन्दू और मुसलमान सैनिक भड़क उठे। उन्होंने ऐसा महसूस किया कि अंग्रेज़ सरकार उनके धर्म को नष्ट करना चाहती है। इसलिए जब मेरठ के सैनिकों में ये कारतूस बाँटे गए तो 85 सैनिकों ने उनका प्रयोग करने से इन्कार कर दिया। इस पर उन्हें कठोर दण्ड देकर बन्दीगृह में डाल दिया गया। सरकार के इस व्यवहार पर भारतीय सैनिकों ने 10 मई, 1857 के दिन हर-हर महादेव, मारो फिरंगी को, का नारा लगाते हुए विद्रोह कर दिया।

The Hindustan Times

INDIA INDEPENDENT : BRITISH RULE ENDS

CONSTITUENT ASSEMBLY TAKES OVER

MOUNTBATTEN'S APPOINTMENT AS GOVERNOR-GENERAL ENDORSED

COLOURFUL CEREMONY MARKS BIRTH OF NATION

NEW STAR RISES IN THE EAST

Governors Sworn In As Free India Is Born

THE PLEDGE

THE NEW CABINET

HOMAGE TO THE FATHER OF THE NATION

स्वतंत्रता की राह

20वीं शताब्दी में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य राजनीतिक संगठनों ने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में एक देशव्यापी आंदोलन चलाया। महात्मा गांधी ने हिंसापूर्ण संघर्ष के विपरीत सविनय अवज्ञा अहिंसा आंदोलन को सशक्त समर्थन दिया। उनके द्वारा विरोध प्रदर्शन के लिए मार्च, प्रार्थना सभाएं, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और भारतीय वस्तुओं को प्रोत्साहन देना आदि अचूक हथियार थे। इन रास्तों को भारतीय जनता ने समर्थन दिया और स्थानीय अभियान राष्ट्रीय आंदोलन में बदल गए। इनमें से कुछ मुख्य आयोजन - असहयोग आंदोलन, दांडी मार्च, नागरिक अवज्ञा अभियान और भारत छोड़ो आंदोलन थे। शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि भारत अब उपनिवेशवादी शक्तियों के नियंत्रण में नहीं रहेगा और ब्रिटिश शासकों ने भारतीय नेताओं की मांग को मान लिया। यह निर्णय लिया गया कि यह अधिकार भारत को सौंप दिया जाए और 15 अगस्त 1947 को भारत को यह अधिकार सौंप दिया गया।

स्वतंत्रता की पूर्व संध्या

राष्ट्रपति द्वारा स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारित किया जाता है। इसके बाद अगले दिन लाल क़िले से तिरंगा झण्डा फहराया जाता है। राज्य स्तर पर विशेष स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिसमें झण्डा फहराने के आयोजन, मार्च पास्ट और सांस्कृतिक आयोजन शामिल हैं। इन आयोजनों को राज्यों की राजधानियों में आयोजित किया जाता है और मुख्यमंत्री इन कार्यक्रमों की अध्यक्षता करते हैं। छोटे पैमानों पर शैक्षिक संस्थानों, आवास संघों, सांस्कृतिक केन्द्रों और राजनीतिक संगठनों द्वारा कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

स्वतंत्रता दिवस का प्रतीक पतंग

स्वतंत्रता दिवस के दिन लाल क़िले पर तिरंगा झण्डा लहराया जाता है

स्वतंत्र भारत की घोषणा

15 अगस्त 1947 स्वतंत्रता दिवस पर जवाहरलाल नेहरू, लॉर्ड माउन्ट बैटन और एडविना 14 अगस्त 1947 को रात को 11.00 बजे संघटक सभा द्वारा भारत की स्वतंत्रता को मनाने की एक बैठक आरंभ हुई, जिसमें अधिकार प्रदान किए जा रहे थे। जैसे ही घड़ी में रात के 12.00 बजे भारत को आज़ादी मिल गई और भारत एक स्वतंत्र देश बन गया। तत्कालीन स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपना प्रसिद्ध भाषण नियति के साथ भेंट दिया।

जैसे ही मध्य रात्रि हुई, और जब दुनिया सो रही थी, भारत जाग रहा होगा और अपनी आज़ादी की ओर बढ़ेगा। एक ऐसा पल आता है जो इतिहास में दुर्लभ है, जब हम पुराने युग से नए युग की ओर जाते हैं. . . क्या हम इस अवसर का लाभ उठाने के लिए पर्याप्त बहादुर और बुद्धिमान हैं और हम भविष्य की चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं

- पंडित जवाहरलाल नेहरू

इसके बाद तिरंगा झण्डा फहराया गया और लाल क़िले की प्राचीर से राष्ट्रीय गान गाया गया।

स्वतंत्रता दिवस पर घर पर ही फहरा रहे हैं तिरंगा, भूलकर भी न करें ये गलतियां

भारत अपना 77वां स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए तैयार है. पिछले साल की तरह इस साल भी भारत सरकार ने लोगों से हर घर तिरंगा अभियान में हिस्सा लेने की अपील की है. हर घर तिरंगा अभियान के तहत पीएम मोदी ने सभी से अपने घर की छत, बालकनी पर तिरंग फहराने की अपील की है. साथ ही इसकी फोटो शेयर करनी की भी अपील की है. यदि आप भी हर घर तिरंगा अभियान में हिस्सा ले रहे हैं तो कुछ बातों को ध्यान में रखना बेहद जरूरी है.

राष्ट्रीय सम्मान अधिनियम, 1971 की धारा 3.23 राष्ट्रीय ध्वज प्रदर्शन के दुरुपयोग के बारे में बताती है. घर पर तिरंगा फहराने के लिए कुछ खास नियम होते हैं. इसे सबसे पहला होता है तिरंगा का साइज. झंडे का आकार आयताकार होना चाहिए. वहीं, इसकी लंबाई चौड़ाई का अनुपात 3.2 होना चाहिए. अशोक चक्र में 24 तीलियां होनी चाहिए. नियमों के बदलने के बाद आप इसे 24 घंटे और 365 दिनों तक बिना रोकटोक लगा सकते हैं.

घर पर यदि तिरंगा फहरा रहे हैं तो फटा और मैला तिरंगा न फहराएं. यदि किसी कारण आपका तिरंगा फट जाता है तो उसे एकांत में जाकर नष्ट कर दें. इसके अलावा तिरंगे के ऊपर कुछ भी लिखा नहीं होना चाहिए. साथ ही इस पर कुछ भी छपा नहीं होना चाहिए. यदि आपके घर पर तिरंगे के अलावा कोई अन्य ध्वज भी फहराया हुआ है तो ध्यान रखें कि वह तिरंगे से ऊंचा न रखा जाए. साथ ही ये तिरंगे के बराबर भी न हो. सबसे अहम बात स्वतंत्रता दिवस के बाद अपनी छत या बालकनी से तिरंगे को उतार दें और तह करके रख दें. याद रखें कि किसी भी स्थित में झंडा जमीन से नहीं छूना चाहिए. झंडे के किसी भी हिस्से को यदि जलाया जाता है या उसे नुकसान पहुंचाया जाता है तो इसके लिए तीन साल की जेल की सजा का प्रावधान है.

उमड़ पड़ा था जनसैलाब

इतिहास के झरोखों से देखें तो दिल्ली की सड़कों पर तब लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा था और वे एक-दूसरे को बधाई दे रहे थे। लोग सड़कों, पार्कों और चौराहों पर गीत गा रहे थे और अधिकतर लोग तिरंगे को हाथ में लेकर संसद की तरफ बढ़ रहे थे। कहा जाता है कि यह एक ऐसा सैलाब था जिसका जोश सातवें आसमान पर था और यह दृश्य वाकई में अद्भुत था, जिसकी कोई कल्पना भी कोई नही कर सकता था। युवा पूरी रात घूमते रहे। इसी तरह की खबरें तब देश के अन्य हिस्सों से भी आ रहीं थीं।

इंद्रधनुष का नज़र आना

इतिहास के पन्नों पर नजर डालें तो तब देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 16 अगस्त की सुबह-सुबह साढ़े आठ बजे लाल क़िले की प्राचीर पर ध्वजारोहण किया। इतिहासकारों की मानें तो उस समय पंडित नेहरू ने सुभाषचंद्र बोस के चलो दिल्ली के नारे और लाल क़िले से आजादी का झंडा फहराए जाने के सपने का जिक्र किया था। कोलकाता के रहने वाले शेखर चक्रवर्ती ने अपने संस्मरणों फ्लैग्स एंड स्टैम्प्स में लिखा है- 15 अगस्त, 1947 के दिन वायसराइल लॉज (अब राष्ट्रपति भवन) में जब नई सरकार को शपथ दिलाई जा रही थी, तो लॉज के सेंट्रल डोम पर सुबह साढ़े दस बजे आजाद भारत का राष्ट्रीय ध्वज पहली बार फहराया गया था। इस दौरान आसमान में इंद्रधनुष दिखाई दिया, जिसे देखकर हर कोई हैरान रह गया। इंद्रधनुष की इस घटना का जिक्र लॉर्ड माउंट बेटन ने भी अपनी रिपोर्ट में किया था, जिसमें उन्होंने इंद्रधनुष के रहस्यमयी तरीके से अचानक दिखने का जिक्र करते हुए इसे चमत्कार से कम नहीं कहा था। 15 अगस्त, 1947 को जब संसद के सामने तिरंगा फहराया गया तो ऐसा लगा कि आसमान भी प्रफुल्लित हो उठा है और उसी समय बारिश की हल्की बौछारें होने लगीं और कुछ देर बाद इंद्रधनुष निकल आया। इन सबके अलावा एक घटना का अक्सर जिक्र होता है जिसके अनुसार, जब पंडित नेहरू लाल क़िले की प्राचीर से झंडा फहरा रहे थे तो उस समय साफ नीले आसमान में एक इंद्रधनुष नजर आया है। इस इंद्रधनुष को देखकर वहां उपस्थित हर शख्स हैरान रह गया था।

देशभक्ति का प्रदर्शन

भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला देश है और यह दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहाँ के नागरिक देश को और अधिक ऊंचाइयों तक ले जाने की वचनबद्धता रखते हैं जहां तक इसके संस्थापकों ने इसे पहुंचाने की कल्पना की। जैसे ही आसमान में तिरंगा लहराता है, प्रत्येक नागरिक देश की शान को बढ़ाने के लिए कठिन परिश्रम करने का वचन देता है और भारत को एक ऐसा राष्ट्र बनाने का लक्ष्य पूरा करने का प्रण लेता है जो मानवीय मूल्यों के लिए सदैव अटल है।

तिरंगे के साथ ही दिखने लगा इंद्रधनुष

15 अगस्त, 1947 को यूं तो देश आजाद हो गया था, लेकिन 15 अगस्त को जब पहली बार तिरंगा फहराया गया तो उस समय अचानक से आसमान में इंद्रधनुष नजर आया, जिसे देखकर सब लोग हैरान रह गए थे। आजादी के बाद से ही हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस का मुख्य कार्यक्रम दिल्ली के लाल क़िले पर आयोजित किया जाता है। यह ऐतिहासिक कार्यक्रम 16 अगस्त, 1947 से चला आ रहा है, जब लाल क़िले की प्राचीर से तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने ध्वजारोहण किया था। तब पूरा देश जश्न के माहौल में डूबा हुआ था और हर जगह लोग एक-दूसरे को बधाई दे रहे थे।

स्वतंत्रता दिवस

प्रो. नीलिमा गुप्ता

(कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि, सागर)

भारत - वैश्विक ज्ञान परंपरा का उज्ज्वल आलोक

भारत, विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक, सदियों से ज्ञान, दर्शन और चेतना का केंद्र रहा है। वैदिक ऋचाओं की गूंज से लेकर नालंदा और तक्षशिला जैसे ज्ञान केंद्रों की गरिमा, भारत की बौद्धिक परंपरा का प्रमाण है। यहाँ ज्ञान को केवल शैक्षणिक उपलब्धि नहीं, बल्कि आत्मबोध और सामाजिक उत्थान का माध्यम माना गया। आज जब वैश्विक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है।

भारत पुन: अपनी प्राचीन ज्ञान-संपदा और समकालीन विज्ञान के समन्वय से एक नई दिशा देने की ओर अग्रसर है। चाहे वह नई शिक्षा नीति हो, डिजिटल नवाचार हों या अंतरराष्ट्रीय शोध-संवाद-भारत का बौद्धिक आलोक एक बार फिर दुनिया को आलोकित कर रहा है। भारत शब्द 'भ' से बना है, जिसका अर्थ है 'ज्ञान' या 'प्रकाश' और 'रत' जिसका अर्थ है 'रत्न' या 'मूल्यवान', यानी भारत का अर्थ है 'ज्ञान का रत्न' या 'प्रकाश का देश'। भारत को 'देवताओं की भूमि' या 'पवित्र भूमि' के रूप में भी देखा जाता है। भारत का नाम ऋग्वेद में वर्णित 'भरत' जनजाति से भी जुड़ा है, जो इस क्षेत्र में निवास करती थी। भारत का अर्थ और महत्व इसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ है। भारत एक विविध और समृद्ध देश है, जो अपनी अनोखी धरोहरों और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की विविधता में एकता एक अद्वितीय विशेषता है, जहाँ विभिन्न जाति, धर्म, संस्कृति और परंपरा के लोग एक साथ रहते हैं जिससे यह अद्वितीय देश बना है, जो पूरे विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है। भारत की धार्मिक विविधता, त्योहार और उत्सव, कला और साहित्य, परंपराएं और रीति-रिवाज से पता चलता है कि भारत की संस्कृति कितनी विविध और समृद्ध है, और यह कैसे विभिन्न प्रकार से व्यक्त की जाती है।

भारत का जन्म एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया से हुआ है, जो कई सदियों में विकसित हुई है। सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक काल, महाजनपद, मौर्य साम्राज्य, स्वतंत्रता संग्राम - इन घटनाओं और सांस्कृतिक विकासों ने भारत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत एक अमूल्य धरोहर है, जिसने अपनी विविधता, समृद्धि और सांस्कृतिक विरासत से अपनी एक अलग पहचान बनाई है। भारत में 22 आधिकारिक भाषाएँ और कई अन्य बोलियाँ बोली जाती हैं तथा विभिन्न संस्कृतियाँ अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों के साथ आती हैं। विभिन्न त्योहार और उत्सव विशिष्ट प्रकार से अलग-अलग राज्यों में मनाए जाते हैं। भारत की अंतरराष्ट्रीय पहचान विविध और समृद्ध है, जो इसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्ता को दर्शाती है। भारत की प्राचीन योग परंपरा शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। भारत की आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति आज विश्व भर में प्राकृतिक उपचार और स्वास्थ्य देखभाल के लिए प्रचलित हो चुकी है। वहीं, भारत के शास्त्रीय संगीत और नृत्य ने अपनी विविधता और सृजनात्मकता के कारण विश्व भर में अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है।

भारत शब्द बोलते ही राष्ट्रीयता का बोध होता है चाहे वह ऐतिहासिक महत्व हो (सिंधु घाटी सभ्यता: भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक) और चाहे वह वैदिक काल हो (भारत की वैदिक परंपरा और संस्कृति का प्रतीक है, जो इसकी धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता को दर्शाता है)। भारत नाम ही राष्ट्रीय प्रतीक है, गौरव और महत्ता से परिपूर्ण है, जो देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में मदद करती है। भारत का तिरंगा झंडा देखकर और राष्ट्रीय गीत को सुनकर हर भारतीय का अपने देश के प्रति प्रेम तथा गौरव जागता है। यदि हम भारत में ज्ञान की बात करें तो भारत एक समृद्ध ज्ञान का स्रोत है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत के प्राचीन ग्रंथ, जैसे कि वेद और उपनिषद, ज्ञान के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भारत की आयुर्वेद और योग

परंपरा विश्वभर में प्रसिद्ध है। इसी प्रकार गणित और खगोल विज्ञान भी महत्वपूर्ण हैं, जैसे कि शून्य का आविष्कार और ग्रहों की गति की गणना। भारत आईटी और सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में भी एक प्रमुख खिलाड़ी उभर कर आया है, जो विश्वभर में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। भारत में शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार और उद्यमिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जो देश की शिक्षा, शोध तथा आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इन पहलुओं से पता चलता है कि भारत ज्ञान का एक समृद्ध सागर है, जिसमें विभिन्न प्रकार का ज्ञान समाहित है। भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आने से ज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज उपलब्ध हुआ है जो देश की शिक्षा प्रणाली को आकार देने और भविष्य की पीढ़ियों को तैयार करने के लिए एक सराहनीय कदम है। यह नीति कुछ प्रमुख उद्देश्यों और परिवर्तनों को शामिल करती है जैसे शिक्षा का अधिकार, मातृभाषा में शिक्षा, उच्च शिक्षा में सुधार, शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार, अनुसंधान और नवाचार, शिक्षा तथा शोध पर खर्च। शिक्षा में इस प्रकार के बदलाव ने ज्ञान के वह द्वार खोल दिए हैं, जिससे कि भारत का नाम- 'ज्ञान का अनमोल रत्न' जीवंत होकर साकार हो गया है। भारतीयता में राष्ट्रीयता की भावना एक ऐसा दीपक है, जो देश की एकता, अखंडता और राष्ट्रीय गौरव को उज्वलित करता है और हम भारतवासी 'भारत' शब्द से राष्ट्रीयता के बोध से संकल्पित होते है, यही कारण है जिससे हम भारतीय होने पर गर्व करते हैं, क्योंकि भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक महत्व और आधुनिक उपलब्धियों वाला देश है। भारत एक अमूल्य धरोहर है, जो अपनी विविधता, समृद्धि और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। भारत की स्वतंत्रता के 78 वर्ष पूरे होने पर हम गर्व से कह सकते हैं- हम भारतीय हैं, हम ज्ञान के रत्न हैं, जो अपनी चमक से एक अलग पहचान बनाकर पूरे विश्व में उजागर हुए हैं।

भारत विभाजन की पीड़ा को समझना जरूरी : प्रो.संजय द्विवेदी

भोपाल। भारत विभाजन की विभीषिका भारतीय आजादी का एक ऐसा बदरंग पन्ना है, जिसकी पीड़ा को देशवासी कभी नहीं भूल पाएंगे। यह लम्हों की नहीं,सदियों की खता थी, जिसकी पीड़ा और टीस दिलों में आज तक है जो बरबस याद आती रहती है। इस आशय के विचार दो दिवसीय आजादी के पर्व, विभाजन की विभीषिका स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अतिथियों ने व्यक्त किये। प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि 1947 में बंटवारे के बाद भी हम रक्तपात रोक नहीं पाए। इसलिए भारत विभाजन की पीड़ा को समझना जरूरी है, ताकि ऐसी घटनाएं दुहराई न जाएं। हमें अपने इतिहास की पूरी समझ होना जरूरी है, इससे ही हम जान पाएंगे कि हम किन रास्तों से होते हुए वर्तमान स्थिति तक पहुंचे हैं और भविष्य में हमें कहां जाना है? उन्होंने कहा कि हम सतर्क होते तो बंटवारा नहीं होता। बंटवारे के बावजूद देश को सांप्रदायिक दंगों के रूप में रक्तपात देखना पड़ा। उन्होंने कहा कि भारत बोध और राष्ट्रीय भावनाओं से भरे युवा ही देश की एकता और अखंडता को सुरक्षित रख पाएंगे। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए लाजपत आहूजा ने कहा कि केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस की घोषणा करके इस त्रासदी के पीड़ितों को अपना दर्द दूसरों के साथ बाटने का मौका दिया है। बंटवारे के दौरान हुए घटनाक्रम से आने वाली पीढ़ियां सबक ले सकती हैं। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए पत्र सूचना कार्यालय एवं केंद्रीय सूचना ब्यूरो के अपर महानिदेशक प्रशांत पाठराबे ने स्वतंत्रता संग्राम और विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि इस अवसर पर केंद्रीय संचार ब्यूरो द्वारा मध्य प्रदेश के कई जिलों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं। कार्यक्रम को शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अजय अग्रवाल, पत्र सूचना कार्यालय के निदेशक मनीष गौतम और केंद्रीय सूचना संचार ब्यूरो के उपनिदेशक शारिक नूर ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम संचालन सहायक निदेशक पराग मांदले ने कियाद्य इस मौके पर सहायक निदेशक सुश्री करिश्मा पंत, सहायक निदेशक अजय उपाध्याय, सहायक निदेशक समीर वर्मा सहित कई गणमान्य नागरिक और छात्राएं मौजूद थीं।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल से नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश त्रिपाठी ने की सौजन्य भेंट

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल से गुरूवार को उनके निवास पर भारतीय नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश त्रिपाठी ने सपरिवार सौजन्य भेंट की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने उनका हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने एडमिरल त्रिपाठी से विभिन्न समसामयिक विषयों पर

चर्चा की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह हम सभी के लिए विशेष गर्व का विषय है कि एडमिरल त्रिपाठी सैनिक स्कूल, रीवा के छात्र रहे हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने राष्ट्र के प्रति एडमिरल त्रिपाठी के उत्कृष्ट योगदान और अद्वितीय सेवाओं के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्हें स्वतंत्रता दिवस की अग्रिम शुभकामनाएँ भी दीं।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खंडेलवाल एवं प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद ने गुरूवार को 'हर-घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत भोपाल मध्य विधानसभा में आयोजित तिरंगा यात्रा में शामिल होकर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर पार्टी की प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती सीमा सिंह जादौन, प्रदेश मीडिया प्रभारी श्री आशीष उषा अग्रवाल, पूर्व विधायक श्री ध्रुवनारायण सिंह, पूर्व सांसद श्री आलोक संजर सहित पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

एम्स भोपाल ने सुरक्षा कर्मियों के लिए एंटी-रैगिंग जागरूकता अभियान आयोजित किया

भोपाल। एम्स भोपाल ने सुरक्षित और सम्मानजनक शिक्षण वातावरण सुनिश्चित करने की अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत करते हुए 13 अगस्त, 2025 को अपने सुरक्षा कर्मियों के लिए एंटी- रैगिंग जागरूकता सत्र का आयोजन किया। यह सत्र छात्र कल्याण के असोसिएट डीन द्वारा संचालित किया गया, जिसका उद्देश्य सुरक्षा कर्मियों को कैंपस में रैगिंग की घटनाओं को रोकने और उनसे निपटने में उनकी अहम भूमिका के प्रति जागरूक करना था। सत्र के दौरान प्रतिभागियों को रैगिंग की परिभाषा और उसके विभिन्न रूपों के साथ-साथ इसके मनोवैज्ञानिक और कानूनी प्रभावों की जानकारी दी गई।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के प्रावधानों और उल्लंघन की स्थिति में होने वाली दंडात्मक कार्रवाइयों पर विशेष जोर दिया गया। सुरक्षा कर्मियों को सतर्क रहने, संदिग्ध गतिविधियों की पहचान करने और विशेष रूप से नए छात्रों के लिए सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण में समय पर रिपोर्टिंग, सही दस्तावेजीकरण और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ समन्वय के महत्व पर भी चर्चा की गई। मैदान पर तत्परता और प्रतिक्रिया क्षमता बढ़ाने के लिए व्यावहारिक उदाहरण और केस स्टडी प्रस्तुत किए गए। सुरक्षा दल ने सुरक्षित और सहयोगी वातावरण बनाए रखने के संकल्प के साथ एम्स भोपाल की रैगिंग के प्रति शून्य सहिष्णुता की नीति को दोहराया।

प्रमोशन में आरक्षण पर सरकार को हाईकोर्ट से मिली मोहलत

सीनियर वकीलों की नियुक्ति के लिए सरकार ने मांगा था समय; अगली सुनवाई 9 सितंबर को

जबलपुर (नप्र)। प्रमोशन में आरक्षण को लेकर दायर जनहित याचिका पर 14 अगस्त को मध्यप्रदेश हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। राज्य सरकार की ओर से कोर्ट में समय मांगा गया, जिसके पीछे कारण बताया गया कि सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ताओं सी.एस. वैद्यनाथन और तुषार मेहता को हाईकोर्ट में बहस के लिए नियुक्त किया गया है। सरकार ने निवेदन किया कि चूंकि दोनों वरिष्ठ अधिवक्ता राज्य का पक्ष रखेंगे, इसलिए उन्हें तैयारी के लिए समय दिया जाए।

चीफ जस्टिस की डिवीजन बेंच ने यह मांग स्वीकार करते हुए अगली सुनवाई के लिए 9 सितंबर की तारीख तय की है। याचिकाकर्ता के अधिवक्ता सुयश मोहन गुरु ने बताया कि चीफ जस्टिस ने यह भी कहा कि सरकार द्वारा जो चार्ट पेश किया गया है, वह यह स्पष्ट नहीं करता कि आंकड़े जनगणना (सेंसर) के आधार पर हैं या फिर सेवाओं में कार्यरत कर्मचारियों के प्रतिनिधित्व के आधार पर। इस पर कोर्ट ने तुलनात्मक वस्तुस्थिति स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं।इसके अलावा हाईकोर्ट ने यह भी कहा है की नई पॉलिसी में सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का पालन हुआ है या नहीं? यह भी बताया जाए।

बता दें कि मध्यप्रदेश में लागू नई प्रमोशन नीति 2025 को लेकर अनारक्षित वर्ग के कर्मचारियों ने यह याचिका दायर की है। इससे पहले सुनवाई 12 अगस्त को प्रस्तावित थी, लेकिन चीफ जस्टिस की डिवीजन बेंच की उपलब्धता नहीं होने के कारण इसे 14 अगस्त तक के लिए टाल दिया गया था।

केंद्रीय मंत्री शिवराज की राज्यों के कृषि मंत्रियों के साथ महत्वपूर्ण वर्चुअल बैठक

नईदिल्ली। शिवराज सिंह ने कहा आगामी रबी सीजन के दौरान 3 अक्टूबर से 18 अक्टूबर तक विजय पर्व के रूप में चलेगा विकसित कृषि संकल्प अभियान। इस बार रबी कांफ्रेंस दो दिन 15 और 16 सितंबर को दिल्ली में होगी और अगले पांच साल की कृषि क्षेत्र की बनेगी कार्ययोजना, प्रगतिशील किसानों और विशेषज्ञों से सुझाव लिए जाएंगे एवं कृषि के समग्र विकास के लिए शीघ्र आयोजित की जाएगी चिंतन बैठक। कहीं भी खाद की कालाबाजारी होने पर की जाएं सख्त कार्रवाई, बेईमानों को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ा जाएं।

ग्वालियर में 'वोट सत्याग्रह तिरंगा यात्रा'

लोकतंत्र और संवैधानिक अधिकारों के लिए बुलंद आवाज

ग्वालियर। आज ग्वालियर विधानसभा में आयोजित वोट सत्याग्रह तिरंगा यात्रा में प्रदेश प्रभारी श्री हरीश चौधरी,प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष श्री उमंग सिंघार एवं वरिष्ठ नेता श्री सुनील शर्मा,विधायक पंकज उपाध्याय, साहब सिंह गुर्जर, सुरेश राजे, जिला कांग्रेस शहर अध्यक्ष देवेन्द्र शर्मा, पूर्व विधायक प्रवीण पाठक सहित अनेक वरिष्ठ नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। यह यात्रा लोकतंत्र, न्याय और संवैधानिक अधिकारों की रक्षा के लिए एक सशक्त मंच बनी।

प्रदेश प्रभारी श्री हरीश चौधरी ने कहा देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर हो रहे हमलों को रोकना और मताधिकार की पवित्रता को बचाना आज हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। भाजपा द्वारा की जा रही वोट चोरी लोकतंत्र की जड़ें कमजोर करने की कोशिश है, और कांग्रेस इसका डटकर मुकाबला करेगी।

नेता प्रतिपक्ष श्री उमंग सिंघार ने कहा हमारी आन, बान, शान — हमारा तिरंगा है। देश में वोट चोरी की साजिशों के खिलाफ यह संघर्ष सिर्फ वोट का नहीं, बल्कि देश की आत्मा को बचाने का है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी ने कहा आज ग्वालियर में वोट सत्याग्रह तिरंगा यात्रा में शामिल होकर लोकतांत्रिक न्याय और संवैधानिक अधिकारों की आवाज उठाई है।

वोट चोरी के जिम्मेदारों को कटघरे में खड़ा किया जाएगा। 'एक व्यक्ति, एक मत' की व्यवस्था स्वस्थ और समृद्ध लोकतंत्र के लिए जरूरी है, किंतु भाजपा ने प्रजातंत्र का अपमान करते हुए वोट चोरी का संगठित अपराध किया है। यह यात्रा ग्वालियर से स्पष्ट संदेश देती है कि कांग्रेस पार्टी लोकतंत्र की रक्षा और मताधिकार की पवित्रता बनाए रखने के लिए हर मोर्चे पर संघर्ष करती रहेगी।

वो भूली दास्ताँ..

गौरव अवस्थी

बकुलिहा- यूपी को पहला 'नमक सत्याग्रही' देने वाला गांव

लालगंज-उन्नाव फोरलेन हाईवे बनने के बाद कई गांव-कस्बों के नाम लिखे दिखने लगे हैं। उनमें एक है- बकुलिहा।

उत्तर प्रदेश में नमक सत्याग्रह के लिए पहला 'सत्याग्रही' देने का श्रेय लालगंज से 12 किलोमीटर दूर स्थित इसी गांव के नाम दर्ज है। दांडी में 7 अप्रैल 1930 को समुद्र के खारे जल से नमक बनाकर ब्रिटिश हुकूमत के 'नमक कर' के आदेश का उल्लंघन करने के बाद महात्मा गांधी ने सारे देश में नमक सत्याग्रह का आग्रह किया। उत्तर प्रदेश में नमक सत्याग्रह की सफलता के लिए कानपुर से प्रकाशित होने वाले प्रताप अखबार के 'प्रतापी' पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी की अध्यक्षता में समिति गठित की गई। इस समिति में पंडित जवाहरलाल नेहरू रफी अहमद किदवई और मोहनलाल सक्सेना सदस्य के रूप में शामिल किए गए।

इसी समिति ने उत्तर प्रदेश में नमक सत्याग्रह के शुभारंभ के लिए रायबरेली को चुना। तब यह सवाल उठा था कि आखिर रायबरेली ही क्यों? इस सवाल का जवाब पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इन शब्दों में दिया- रायबरेली में अंगद, हनुमान, सुग्रीव जैसे कार्यकर्ता घड़ी भर की सूचना मिलते ही जान हथेली पर रखकर निकल पड़ते हैं। इसकी दूसरी वजह रायबरेली का 1921 का किसान आंदोलन भी था। रायबरेली का 'मुंशीगंज गोलीकांड' भारतीय स्वाधीनता इतिहास में मिनी जलियांवाला बाग कांड के रूप में याद किया जाता है। सई नदी के तट पर ब्रिटिश हुकूमत और जमींदार सरदार वीरपाल सिंह के कारिंदों द्वारा बरसाई गई गोलियों से सैकड़ों किसान शहीद हुए। किसानों के खून से नदी का पानी लाल हो गया था। इस गोली कांड की सूचना पर रायबरेली आए पंडित जवाहरलाल नेहरू को नजर बंद कर दिया गया था। अपनी 'आत्मकथा' में उन्होंने इस कांड का जिक्र भी किया है। गणेश शंकर विद्यार्थी को इस कांड की विस्तार से रिपोर्ट छापने के लिए दंडित भी किया गया था। बाराबंकी में जन्मे रफी अहमद किदवई की कर्मभूमि रायबरेली ही रही। यह तीनों उत्तर प्रदेश में नमक सत्याग्रह के शुभारंभ के लिए गठित की गई समिति के सदस्य थे।

रायबरेली को नमक सत्याग्रह के शुभारंभ के लिए चुने जाने की एक वजह यह भी हो सकती है। समिति ने अपने इस निर्णय की सूचना महात्मा गांधी को भी भेजी। महात्मा गांधी भी मुंशीगंज गोलीकांड भूल नहीं थे। इसलिए उन्होंने फैसले पर तुरंत मोहर लगाते हुए अपने साबरमती आश्रम में रहने वाले रायबरेली के शिवगढ़ के बाबू शीतला सहाय को एक पत्र देकर रायबरेली भी भेजा। यह पत्र था, राजा अवधेश सिंह और उनके भाई कुंवर सुरेश सिंह के नाम। पत्र में इन दोनों को रायबरेली के आंदोलन को नेतृत्व देने का निर्देश दिया गया था।

जिला स्तर पर रफी अहमद किदवई मोहनलाल सक्सेना और कुंवर सुरेश सिंह की समिति ने 8 अप्रैल 1930 को

डलमऊ के गंगा तट पर नमक बनाने का ऐलान किया और प्रथम सत्याग्रही के रूप में बकुलिहा गांव में जन्मे बाबू सत्यनारायण श्रीवास्तव को चुना गया। डलमऊ के मेहंदी हसन ने सत्याग्रह के लिए शेख सखावत अली का मकान निश्चित किया लेकिन प्रशासन ने 7 अप्रैल को ही मेहंदी हसन को गिरफ्तार कर लिया। रफी अहमद किदवई की तलाश में छापे मारे जाने लगे। ब्रिटिश पुलिस की सक्रियता को देखते ही बाबू सत्यनारायण श्रीवास्तव अंग्रेज हुकूमत की आंखों में धूल झोंकते हुए रफी अहमद किदवई के साथ रायबरेली आ गए। 1921 के मुंशीगंज गोलीकांड को ध्यान रखते हुए पंडित मोतीलाल नेहरू भी प्रयाग से रायबरेली पहुंच गए।

ब्रिटिश पुलिस और प्रशासन की सक्रियता के चलते डलमऊ में गंगा के किनारे नमक बनाने का प्लान फेल हो गया लेकिन पंडित मोतीलाल नेहरू की उपस्थिति में 8 अप्रैल 1930 को बाबू सत्यनारायण श्रीवास्तव ने लोनी मिट्टी से नमक बनाकर नमक कानून तोड़ कर प्रथम सत्याग्रही होने का गौरव प्राप्त किया। बाबू सत्यनारायण 1921 के असहयोग आंदोलन में नौकरी छोड़कर शामिल हुए। कई वर्षों तक जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री रहे। नमक एवं व्यक्तिगत सत्याग्रह, लगान बंदी और भारत छोड़ो आंदोलन में करीब साढ़े 3 वर्ष से ज्यादा दिन जेल में बंद रहे। रू. 200 जुर्माना भी हुआ। लगानबंदी आंदोलन के दौरान बकुलिहा को बारडोली जैसा बनाने का श्रेय भी बाबू सत्यनारायण श्रीवास्तव को ही है।

रायबरेली के कांग्रेस कार्यालय तिलक भवन में 'नमक कर' के विरोध में नमक बनाकर उत्तर प्रदेश में नमक सत्याग्रह की शुरुआत 8 अप्रैल 1930 को हुई। इसके बाद रायबरेली समेत पूरे प्रांत में गांव-गांव नमक बनने का सिलसिला शुरू हो गया। नमक कर के खिलाफ सत्याग्रह प्रारंभ होने के बाद पंडित मोतीलाल नेहरू जैसे ही वापस गए रायबरेली में अंग्रेज पुलिस ने गिरफ्तारियां शुरू कर दी। बाबू सत्यनारायण श्रीवास्तव, महावीर, चतुर्थी तथा रामदुलारे को गिरफ्तार कर लिया गया। नमक कानून तोड़ने में बाबू सत्यनारायण श्रीवास्तव 6 महीने तक जेल में रहे।

आजादी के आंदोलन में बकुलिया गांव स्वाधीनता संग्राम सेनानी के केंद्र में रहा। महात्मा गांधी पंडित जवाहरलाल नेहरू रफी अहमद किदवई से लेकर आजादी के राष्ट्रीय नायकों का गांव में आना-जाना रहा। गांव का कामामाई मंदिर आजादी के आंदोलन कार्यों के कार्यालय की तरह उपयोग में आता रहा। मंदिर से सटे बाग में सभाएं होती रही लेकिन सरकार और सरकारी अधिकारियों के लिए यह ऐतिहासिक गांव अब एक साधारण गांव की तरह ही है। हालांकि, ग्राम प्रधान सुरेश त्रिवेदी ने आजादी के आंदोलन की याद दिलाने और बाबू सत्यनारायण श्रीवास्तव की स्मृतियों को जीवंत रखने के लिए गांव के एक प्रवेश द्वार पर 'बाबू सत्यनारायण श्रीवास्तव द्वार' निर्मित कराया है। नमक सत्याग्रह के लिए प्रथम सत्याग्रही देने वाले बकुलिहा गांव के इतिहास से नई पीढ़ी अनजान है। अब नई पीढ़ी को आजादी के इतिहास से परिचित कराने की जरूरत है।

बड़े तालाब की लहरों के बीच दिखा देशभक्ति का अद्भुत रंग

भोपाल की बड़ी झील, कश्मीर की डल-लेक से कम नहीं इसे और विकसित किया जायेगा : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। हर घर तिरंगा अभियान के तहत मध्यप्रदेश खेल विभाग द्वारा राजधानी भोपाल के बड़े तालाब में देशभक्ति से ओत-प्रोत विशाल जल तिरंगा यात्रा का आयोजन किया। भोपाल में सीएम डॉ. मोहन यादव ने क्रूज लेक प्रिंसेस में सवार होकर तिरंगा लहराया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भोपाल की बड़ी झील, कश्मीर की डल-लेक से कम नहीं है इसका और अधिक विकास किया जायेगा। यहां पर्यटन विभाग के सहयोग से शिकारे भी संचालित किये जायेंगे। उन्होंने कहा कि वॉटर स्पोर्ट्स सहित सभी प्रमुख खेलों में ओलम्पिक और कॉमनवेल्थ जैसी अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में देश के लिए अधिक से अधिक पदक लाने के उद्देश्य से राज्य में खेल गतिविधियां संचालित की जा रही हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश में जारी हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत भोपाल के

बड़े तालाब के बोट क्लब से निकाली गई जल तिरंगा यात्रा का शुभारंभ कर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने झंडी दिखाकर जल तिरंगा यात्रा की शुरुआत की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बड़ी संख्या में तिरंगे गुब्बारे आकाश में छोड़े।

जबलपुर में नर्मदा में तैरकर तिरंगा यात्रा

जबलपुर में अखंड भारत संकल्प तिरंगा तैराकी यात्रा का आयोजन किया गया। यह यात्रा सुबह साढ़े 8 बजे जिलहरी घाट से शुरू हुई। इसमें 100 से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया। 10 किमी तक नर्मदा नदी में एक घाट से दूसरे घाट तक तैराकी की। कई प्रतिभागियों के हाथों में तिरंगा भी था। इस यात्रा में 6 साल की प्रज्ञा भदौरिया भी शामिल हुई। यात्रा करीब 2 घंटे में तिलवाराघाट पहुंची। मध्यप्रदेश में 15 अगस्त से पहले जगह-जगह तिरंगा यात्रा निकाली जा रही थी। भोपाल में बड़े तालाब पर नावों पर तिरंगा लहराया गया। वॉटर स्पोर्ट्स प्लेयर्स ने भारत माता की जय के नारे लगाते हुए बोटिंग की। जबलपुर में नर्मदा नदी में तैरकर 10 किलोमीटर लंबी तिरंगा यात्रा निकाली गई।

शहीद स्व. सुर्वे के परिवार को मिला पक्का आवास

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश सहित देश के 15 राज्यों में 'शहीद समरसता मिशन' के माध्यम से अमर बलिदानियों के परिवारों के लिये सर्वसुविधायुक्त पक्के आवासों की व्यवस्था की जा रही है। मुख्यमंत्री ने बुधवार को उज्जैन के शहीद स्व. गजेंद्र सुर्वे के परिवार को समर्पित सर्वसुविधायुक्त आवास 'राष्ट्र शक्ति मंदिर' का लोकार्पण किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि शहीद समरसता दिवस पर राष्ट्र शक्ति मंदिर सरस्वती भवन का लोकार्पण करने का यह अवसर बेहद खास है, जिन्होंने भारत माता की सेवा में अपनी जान की बाजी लगाई। ऐसे शहीद स्व. गजेंद्र सुर्वे के परिवार को आज सर्वसुविधा युक्त आवास समर्पित करना गर्व का विषय है। शहीद श्री सुर्वे के बलिदान से उज्जैन गौरवान्वित हुआ है। श्री मोहन नारायण के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सहित देश के 15 राज्यों में सक्रिय शहीद समरसता मिशन चलाया जा रहा है, जिसमें अमर बलिदानियों के परिवारों के लिए पक्के आवास की व्यवस्था की जा रही है।

प्रधानमंत्री के फाइव एफ विजन से मध्यप्रदेश परिधान और वस्त्र उद्योग का बनेगा वैश्विक केन्द्र: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 5 एफ विजन को ध्यान में रखते हुए मध्यप्रदेश परिधान और वस्त्र उद्योग में 'फार्म टू फाइबर, फाइबर टू फैक्ट्री, फैक्ट्री टू फैशन और फैशन टू फॉरेन' की समूची वैल्यू चेन को एकजुट कर वैश्विक केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। प्रदेश के धार जिले में स्थापित होने वाले पीएम मित्रा पार्क से प्रदेश में टैक्सलाइल क्षेत्र को नई ऊँचाइयाँ मिलेंगी। राज्य में ऑर्गेनिक कॉटन का सुदृढ़ आधार, आधुनिक टेक्सटाइल/गारमेंट क्षमताएं, प्रचुर ग्रीन एनर्जी, स्थिर नीति वातावरण और तेज़ फैसले लेने की प्रशासनिक संस्कृति उद्योगों को वह भरोसा देती है, जिससे वैश्विक ब्रांड्स मध्यप्रदेश में निवेश लिए आकर्षित होते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'मेड इन एमपी - वियर एक्रॉस द वर्ल्ड' केवल एक नारा नहीं, बल्कि राज्य का औद्योगिक मिशन है, जिसके तहत प्रदेश के उत्पादों की वैश्विक बाजारों तक प्रतिस्पर्धी पहुंच सुनिश्चित की जा रही है। टेक्सटाईल्स एवं गारमेंट सेक्टर से किसान महिला, युवा एवं गरीब वर्गों का सशक्तिकरण हो रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरूवार को मुख्यमंत्री निवास समत्व भवन में बीएसएल के अंतराष्ट्रीय सोर्सिंग लीडर्स के साथ राउण्ड टेबल बैठक की। इस अवसर पर राज्य सरकार और बीएसएल के बीच एमओयू भी हुआ। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैठक में उपस्थित अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड प्रतिनिधियों और सोर्सिंग प्रमुखों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश ने प्रधानमंत्री के 5 एफ विज़न को जमीनी रूप दिया है। दिल्ली में 31 जुलाई को हुई पहली बैठक को उन्होंने संकल्प से सफलता तक की यात्रा का प्रारंभ बताया और कहा कि भोपाल की यह बैठक उस संकल्प को ठोस परिणामों में बदलने का अवसर है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि धार में 2,177 एकड़ में पीएम मित्रा स्थापित किया जा रहा है। जल्द ही प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा इसका भूमि पूजन किया जाएगा। भूमि-पूजन से पूर्व ही 16 हजार करोड़ रु. से अधिक के निवेश अभिरुचि-पत्र प्राप्त हो चुके हैं। टैक्सटाइल सेक्टर में अब तक प्रदेश के 3,513 करोड़ रूपये से अधिक का निवेश प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश को निवेश फ्रेंडली स्थल बनाने के लिए सरकार ने कई नीतियां बनाई हैं। उद्योग संबंधी 29 अनुमतियों को कम करके अब 10 कर दिया गया है।

E-mail-b.betul@rediffmail.com Ph. No. 07141-234470

बैतूल नागरिक सहकारी बैंक मर्या. बैतूल

कॉलेज रोड, सिविल लाईन बैतूल (म.प्र.) 460001

79वॉ 'स्वतंत्रता दिवस' की हार्दिक शुभकामनाएं

विश्वास की अनवरत यात्रा जारी 49 वर्षों से प्रगति पर अग्रसर होकर सदैव सेवा में तत्पर

सहकार समृद्धि का द्वार

हमारे बैंक की सुविधाओं पर एक दृष्टि

UPI IMPS, ATM कार्ड, BBPS एवं मोबाईल बैंकिंग की सुविधा उपलब्ध। हमारी शाखा में आर.टी.जी.एस./एन.ई.एफ.टी. के माध्यम से राशि प्राप्त करने व भेजने की सुविधा उपलब्ध है। साउण्ड बॉक्स क्यूआर कोड सुविधा। एस. एम. एस सुविधा प्रारंभ एवं कोर बैंकिंग सुविधा। व्यवसायिक ऋण, गृह ऋण, साख सीमा ऋण, संपत्ति बंधक ऋण स्वर्ण आभूषणों पर त्वरित ऋण सुविधा उपलब्ध। किसान विकास पत्र/राष्ट्रीय बचत पर ऋण सुविधा। दुपहिया, चार पहिया वाहन क्रय करने हेतु ऋण सुविधा उपलब्ध। सावधि जमाओं पर आकर्षक ब्याज दरें/नगदी लेन देन के समय में वृद्धि - समय प्रात- 10.30 से 6.00 बजे तक। चालू खाते में औसत न्यूनतम 10000/- शेष रहने पर RTGS/NEFT सुविधा मुफ्त। ई पेमेंट व डीबीटी (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर) जैसी सुविधा। एसीएच / ईसीएस पर्सनलाईस चेक बुक सुविधा। दूसरे एवं चौथे शनिवार अवकाश।

मा. जीआर कोसे
मुख्य कार्यपालन अधिकारी

समस्त बैंक अधिकारी एवं कर्मचारीगण

मा. के.के. शिव
प्रशासक

स्वाधीनता के अमर बलिदानियों को कोटि-कोटि नमन

स्वदेशी की शक्ति से आत्मनिर्भरता को गति देता मध्यप्रदेश

79 वें

स्वतंत्रता दिवस

की प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

स्वदेशी अभियान के साथ औद्योगिक विकास

उद्योगों को बढ़ावा देने के प्रयासों से ₹32 लाख करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए, जिनसे 23 लाख से अधिक रोज़गार होंगे सृजित

कमज़ोर वर्ग का उत्थान

मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा, डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना, संबल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन जैसी अनेक योजनाओं के माध्यम से जरूरतमंदों को मिल रही सहायता

युवाओं का सर्वांगीण विकास

शिक्षा, कौशल निर्माण के साथ युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन प्रारंभ, कौशल विकास और रोज़गार के अवसरों से जोड़ने के लिए मध्यप्रदेश युवा प्रेरक अभियान और आगामी 5 वर्षों में 2.5 लाख नौकरियां देने जैसे प्रयासों से युवा हो रहे सशक्त

आत्मनिर्भर होती महिलाएं

महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के लिए देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन, मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में प्रतिमाह ₹1250 एमएसएमई में महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन, लखपति दीदी योजना और शासकीय सेवाओं में 35% तक महिला आरक्षण

खुशहाल और समृद्ध अन्नदाता

किसानों की आय में वृद्धि, जलवायु-अनुकूल खेती तथा फसल का उचित मूल्य निर्धारित करने के लिए मध्यप्रदेश कृषक कल्याण मिशन, कृषि संबंधित उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कृषि उद्योग समागम का आयोजन, पीएम किसान सम्मान निधि एवं मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना से आ रही है खुशहाली

प्रातः 9:00 बजे
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव
से लाइव जुड़ें

"स्वतंत्रता दिवस केवल एक पर्व नहीं, बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, स्वाभिमान और गौरव का प्रतीक है। यह अवसर हमें हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, बलिदान और योगदान को स्मरण करने तथा उनके दिखाए मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।
-डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP D11083/25

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2025